हिमालय को छूने की कोशिश
चित्र - पंढीनाथ कुकडे

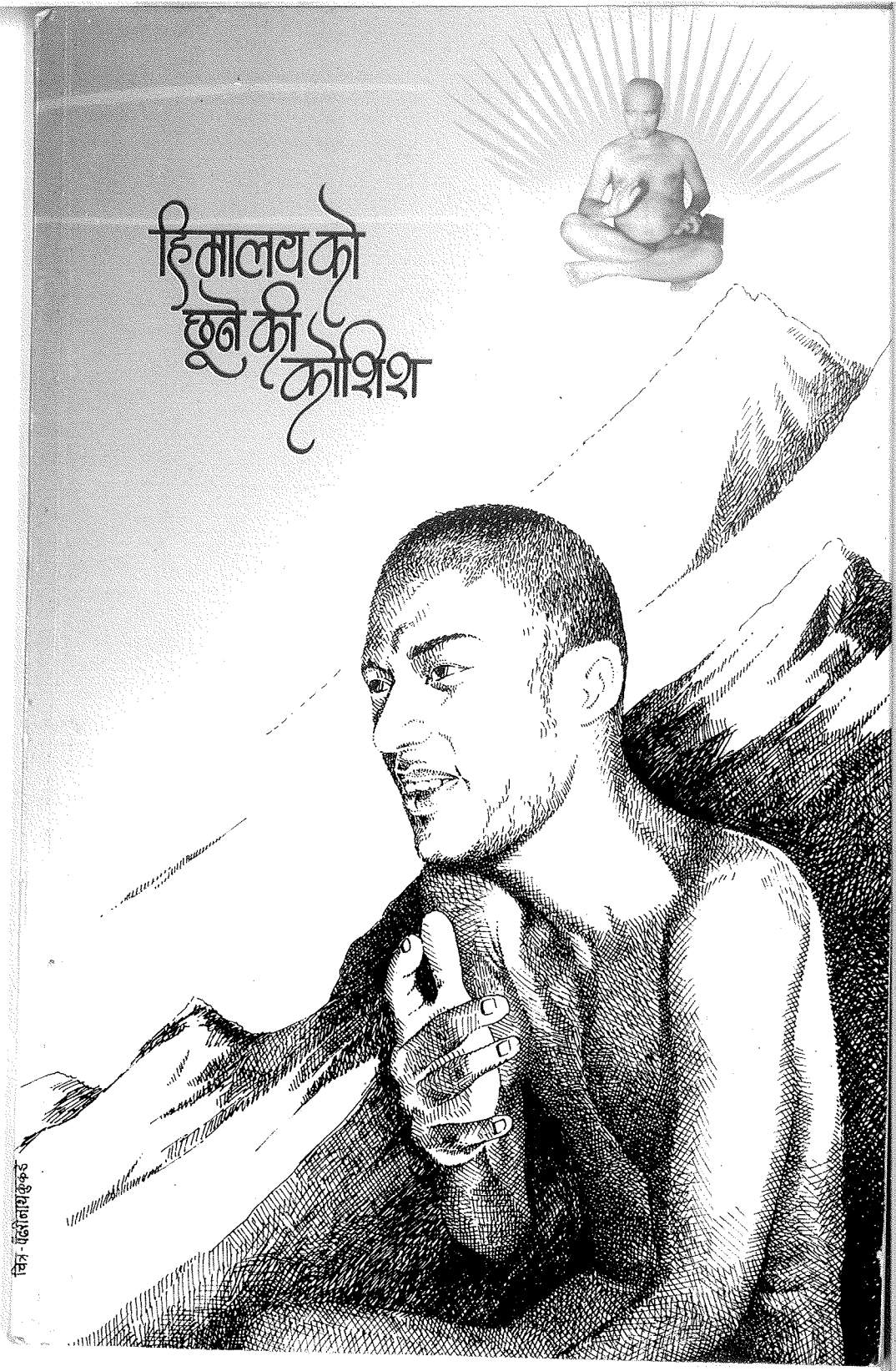

वीरेन्द्र कुमार से मुनि क्षमासागर...

क्षुल्लक दीक्षा के पूर्व आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से अनुमति प्राप्त करते हुए .(१० जनवरी, १९८०)

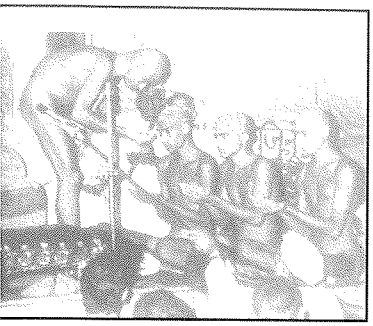

ार्य श्री मुनि दीक्षा के संस्कार देते हुए.
नागिर क्षेत्र (२० अगस्त, १९८२)

क्षा .

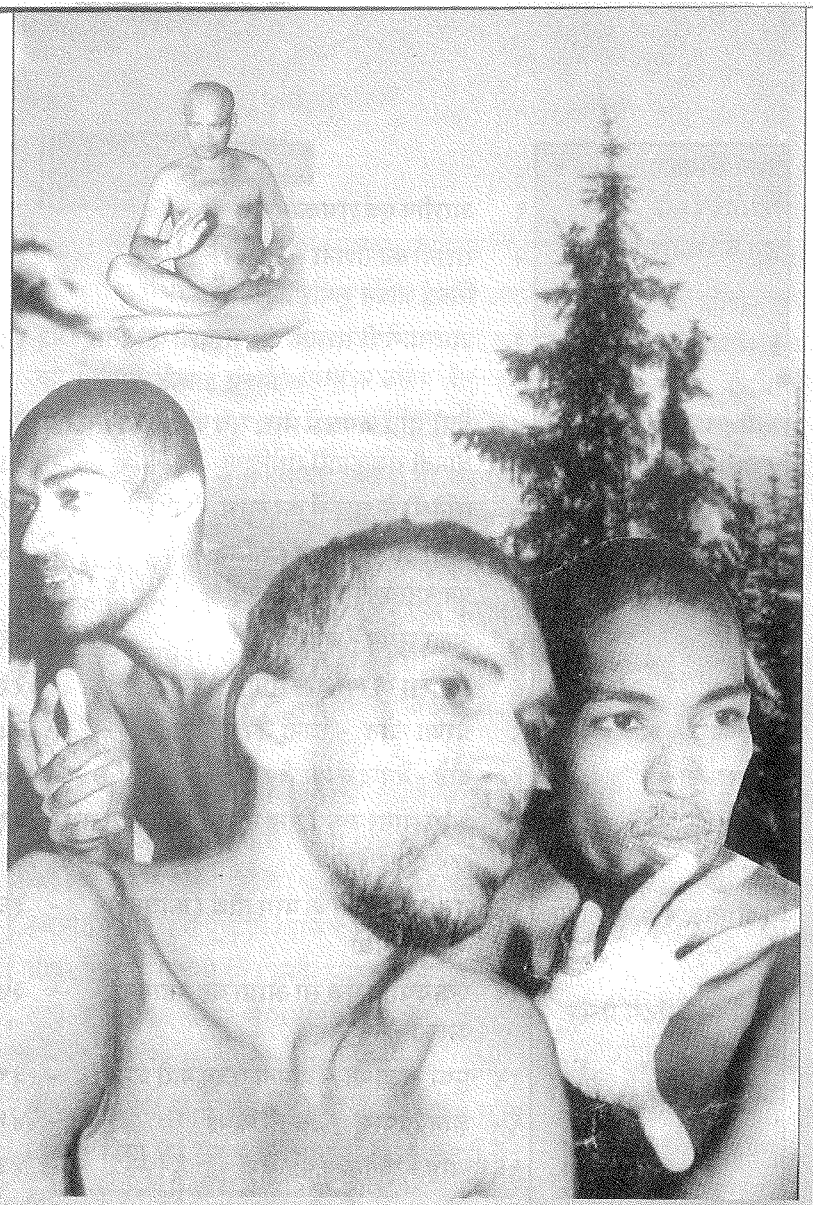

।। हिमालय को छूने की कोशिश ।।

प्रथम संस्करण - २००२
हिमालय को छूने की कोशिश
प्रकाशक :
श्रीमती सुधा पटोरिया
ओम गुरुकुल सोसायटी
सेक्टर-१९, नेरुल
नवी मुम्बई
☎ : ७७००४००
श्रीमती अरुणा जैन
सी-२/२०/२:४
सेक्टर-१६, वासी नगर
नई मुम्बई
☎ : ७६६१७९२
साजसज्जा :
पांडुरंग दाभाड़े, नागपुर
मुख पृष्ठ :
पंढरीनाथ कुकड़े, नागपुर
मुद्रक :
गजानन प्रिंटिंग प्रेस
गणेशपेठ, नागपुर
☎ ७२३२००, ७२९६००
संपादन :
राजेन्द्र पटोरिया
आजाद चौक, सदर,
नागपुर-४४० ००१
☎ : ५२०३२७
मूल्य :
भावनाओं का परिष्कार

अनुक्रम

१	आशीष एवं शुभकामनाएं	- ५
२	**रोशनी का रोशनी से मिलन** सिंघई जीवन कुमार जैन	- ९
३	**आत्मान्वेषी साधक की पारदर्शी कविताएँ** डॉ. कुसुम पटोरिया	- ११
४	**मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे** श्रीमती राजकुमारी रांधेलिया	- १७
५	**मुनिश्री के वचनों का लाभ** - शशि जैन	- १९
६	**गागर अपनी भर ले (कविता)** प्रेम नारायण उपाध्याय 'प्रेम'	- २०
७	**श्रद्धा सुमन** - जया जैन	- २१
८	**बुन्देला के लाल** - सुधा पटोरिया	- २३
९	**प्रेरणा स्रोत** - रंजना जैन पटोरिया	- २७
१०	**दोहे** - देवेन्द्र कुमार जैन	- ३०
११	**क्षमा सागर उर्फ वीरेन्द्र ने खूब आम खिलाये** राजेन्द्र पटोरिया	- ३१
१२	**तुम आस्थाओं के परम तीर्थ (कविता)** साधना मिश्रा	- ३६
१३	**एक ज्योति पुंज सा आया वह महामना** अरुणा जैन	- ३७
१४	**पुष्प श्रद्धा के** - श्रीमती राजकुमारी जैन	- ३९
१५	**ज्ञान पिपासु** - आरती सिंघई	- ४१
१६	**चाह** - योगेन्द्र कुमार जैन	- ४३
१७	**मेरे गुरुवर मुनिश्री क्षमासागर जी** श्रीमती सुधा नरेन्द्र कुमार जैन	- ४५
१८	**(कविता) गुरुवर के आशीष** श्रीमती मालती जायसवाल **भावार्पण** - अर्चना मलैया	- ४७
१९	**क्षमा सहित** - श्रीमती सीमा जैन 'पप्पी'	- ४८

भूमिका

संत क्षमासागरजी की विद्वत्ता, उनके कवि हृदय तथा ज्ञान रत्नों से आपूरित प्रवचनों से सभी भक्तगण परिचित होंगे। उन्होंने अपने चिन्तन, मनन से भरपूर उपदेशों द्वारा श्रावकों की आत्मा में छाए अज्ञानान्धकार को दूर किया है तथा श्रमण संस्कृति को विशिष्ट ऊँचाई प्रदान की है। उनका व्यक्तित्व पारदर्शी तथा बहुआयामी है। उनका दिगम्बरत्व भी अपने आप में एक श्रृंगार है।

बहुत दिनों से मन में यह भावना घर कर रही थी कि जिस व्यक्तित्व के कारण अध्यात्म जगत में आने की लौ लगी उस व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा और अपनी भावनाओं का समर्पण हम कर सकें। अपनी भावनाओं के साथ-साथ, सबकी भावनाओं को बटोरकर, उन्हें संजोकर एक पुस्तक का आकार दे सकें।

इस समर्पण में हमने उन अछूते संस्मरणों को संजोया है जो उनके अन्तर्तम के सभी पक्ष को उजागर करते हैं। शायद पाठकों को भी उनके जीवन की इस पक्ष की जानकारी भाएगी।

कहाँ हिमालय जैसा अमल-धवल विराट व्यक्तित्व और कहाँ उस व्यक्तित्व को उजागर करने की हमारी कोशिश? वास्तव में इस लघुपुस्तिका द्वारा हमने हिमालय को छूने की कोशिश की है। इन भाव-भीने अंतरंग संस्मरणों और श्रद्धा समर्पणों का स्वागत होगा, हमें पूर्ण विश्वास है। इस महामना के जीवन से सदैव ज्ञान-प्रकाश की प्रखर किरणें बिखरती रहें। इनके स्वस्थ और निर्विघ्न साधना की कामना करते हुए यह लघु-प्रयास इन चरणों में समर्पित है।

पूजनीय श्री पूरनचंद जैन, अधिवक्ता, गुना, आदरणीय श्री नीरज जैन, सतना व भाई योगेन्द्र जैन, मुंबई की प्रेरणा, आशीष व सजगता ने हमारी भावनाओं को सम्बल दिया है। उन सभी श्रावकों के आभारी हैं, जिन्होंने अपनी भावनाओं को हमारी भावनाओं से एकाकार किया है।

जब हमने इस पुस्तिका में मुद्रण के विषय में 'खनन भारती' के संपादक श्री राजेन्द्र पटोरिया, नागपुर से बात की तो उन्होंने इस कार्य को सहर्ष स्वीकारा। इसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

- सुधा पटोरिया
- अरुणा जैन

आशीष एवं शुभकामनायें

'गुरू की अँगुलियों पर
हम इसीलिए
विश्वास करते हैं कि वह
मिट्टी को
आकार ही नहीं
प्राण भी देता है।'

प्रिय डॉ. नरेन्द्र एवं सौ. सुधा

सप्रेम याद।

यह जानकर अच्छा लगा कि तुम पूज्य क्षमासागरजी पर कुछ प्रकाशन कर रही हो। 'गुणानुवाद' गुरु भक्ति का उत्तम प्रगटीकरण है और अनुशरण सर्वोत्तम। जिससे, जब, जैसा और जितना बन जाये सो करना चाहिए। प्रकाशन की सफलता के लिए हमारी शुभकामनाएँ हैं।

मुनि क्षमासागर गहरी चेतना में गम्भीर चिन्तन वाले मनीषी हैं। वे बाहर-भीतर एक जैसे 'दिगम्बर' हैं। जीवन में ऐसा बन जाना एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी की पारदर्शी निश्छलता और पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी के कठोर साधना-संकल्पों का अद्भुत सामंजस्य क्षमासागरजी के व्यक्तित्व में रूपायित है। उन जैसा सरल और तरल साधक हमारे सामने है यह हमारा सौभाग्य है। वे स्वस्थ रहें और दीर्घकाल तक भगवान महावीर की जीवन-पद्धति को साकार करते रहें ऐसी ही कामना है।

- नीरज जैन

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
प्रधान सम्पादक - प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार (त्रै. पत्रिका)
गौरव सदस्य - एस.डी.जे.एम.आई. मैनेजिंग कमेटी,
श्रवणबेलगोल

शांति सदन, कम्पनी बाग, सतना
(म.प्र.) ४८५००१.

सौभाग्यवती बेटी अरुणा,

आशीष,

मुझसे तुम्हारी यह अपेक्षा है कि मैं पूज्यमुनि श्री क्षमासागर जी महाराज के संबंध में अपने भाव शिशुओं को शब्दों की पोशाक पहनाऊँ पर बेटी, दिगम्बर मुनिराज के विषय में पोशाकी शब्द तो कुछ भी कह सकने में असमर्थ हैं।

भावों की मुद्राएँ तो होती हैं पर उनके शब्द नहीं होते। पूज्य मुनिराज के पावन चरणों में मैं अपनी श्रद्धा शब्दों के माध्यम से नहीं भावों के जल-चंदन से ही निरन्तर समर्पित करता रहता हूँ। वे जब सामने होते हैं तब, मेरे भाव स्वयं को दीपरूप ढाल लेते हैं, आस्था अपने आप स्नेह (तेल) बन दीप में भर जाती है और श्रद्धा की ज्योतित वर्तिका से उनकी आरती उतारता रहता हूँ। गुना में मण्डी बामौरा में और ऐसे ही अन्य स्थानों में मैंने ऐसे ही आरती उतारी है उनकी। जब वे सामने नहीं होते तब जहाँ भी वे होते हैं वहाँ-वहाँ मेरे भाव पंछी उड़कर उनके चरणों में पहुँच जाते हैं। व्यस्तताओं और विवशताओं के पिंजरों में वे कैद नहीं रह पाते।

सिंघई वीरेन्द्र कुमार ने एम.टेक तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद अब

परम श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन किये तो उनकी दिगम्बर मुद्रा के सौंदर्य से ऐसे अभिभूत हुए कि घर के स्व-द्वारों को खोलकर/छोड़कर अपने आप में प्रवेश पाने के लिए चल पड़े।

मैंने जब-जब भी उनके दर्शन किये हैं, अतृप्ति ही लेकर लौटा हूँ और फिर जहाज के पंछी की तरह उड़कर उनके दर्शनों के लिए पहुँचता रहा हूँ। उन्हें सुनना और सुनते रहना तो जैसे स्वयं को मंत्र कीलित करने की घड़ियों को आमंत्रण देना होता है। वे जब प्रवचन करते हैं और शब्द सेतु के माध्यम से 'अर्थ और भाव को सम्प्रेषित करते हैं तब प्राण-वीणा के तार झंकृत होकर जिस आनंदमय संगीत की रचना करते हैं उससे अतिन्द्रिय सुख सा अनुभव होता है। उनके प्रवचन पांडित्य से बोझिल नहीं होते, वे तो कबीर की सी सीधी-सादी शैली में अन्तर के पट खोलते जाते हैं। उनके प्रवचनों में प्रमाणिकता, व्यावहारिकता और प्रायोगिकता होती है। भाषा में शब्द कम और अर्थ अधिक होते हैं। छोटी-छोटी रोचक बोध कथाओं के माध्यम से भाषा की लक्षणा और व्यंजना शक्तियों के सहारे वे ऐसी बातें कहते हैं जो हर श्रोता अपनी गांठ में कसकर बांधकर ले जाने के लिए उत्सुक रहता है। वे सीख देते हैं 'जीवन विज्ञान' की। 'धर्म' को वैज्ञानिकता के सहारे जीना सिखाते हैं। हमारे आचार/व्यवहार दिखावटीपन से अपमिश्रित न हों। जैसे हम हैं/जैसा हमें होना चाहिए वैसा दिखने/बनने के लिए हम कोई मुखौटा न लगायें। प्लास्टिक के फूलों को बिना पानी भरे, हजारे से सींचने का सा अभिनय हमें मुक्ति के द्वार की ओर नहीं ले जायेगा, अपितु, ऐसे अभिनय से तो हमारे संसार भ्रमण की श्रृंखला और अधिक मजबूत और लम्बी होती जाएगी।

वे सुधारक के दम्भ से कोसों दूर हैं। वे तो संस्कारों का हितकारी प्रसाद ही निरंतर बांटते रहते हैं।

उनकी पावन प्रेरणा से आयोजित की गई वैज्ञानिक गोष्ठियों ने जहाँ एक ओर जैन दर्शन की मान्यताओं की प्रामाणिकता उजागर की है वहीं दूसरी ओर यह भी स्थापित किया है कि जैनाचार्यो द्वारा अनुभूत सत्य तथ्य के रूप में स्वयं सिद्ध है।

सरल होना बहुत कठिन है। कठिन होना बहुत सरल है। जो अत्यंत कठिन है, उस सरलता को पूज्य मुनिश्री ने अपनी सतत साधना से अन्तर में अनावृत किया है। 'कठिन लेकिन सुखद' शीर्षक की उनकी क्षणिका सी छोटी कविता प्रमाण रूप में उद्धरणीय है-

''अभी चले जाओगे
जाओ
आप आए हो
आओ
कितना कठिन
लेकिन
कितना सुखद होता है
जब कोई
इस तरह
सब स्वीकार कर लेता है।''
ऐसी ही एक और रचना
'एक अहसास था'
जहाँ तरलता थी
मैं डूबता चला गया
जहाँ सरलता थी
मैं झुकता चला गया
संवेदनाओं ने
मुझे जहाँ से छुआ
मैं वहीं से
पिघलता चला गया...''

कवि के रूप में मुनिश्री अत्यन्त प्रकृतिस्थ हैं 'आकाश, सूरज, चिड़िया, सागर, नदियाँ सभी उनके चिंतन और अभिव्यक्ति में देखे जा सकते हैं।

पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी जैसे संतों के दर्शन करने से, उनकी आत्मानुभूति से उपजे चिन्तन से स्वयं को संवारने/सहेजने के अवसर जब-जब भी मिलते हैं मैं धन्यता से मण्डित हो जाता हूँ।

पूज्य मुनि श्री के प्रति तुम्हारी श्रद्धा प्रतिपल वृद्धिगत हो, इसी कामना के साथ,

तुम्हारा ही पिता

श्री पूरनचन्दजी जैन
अधिवक्ता, ३५, महात्मा गांधी मार्ग, गुना (म.प्र.)

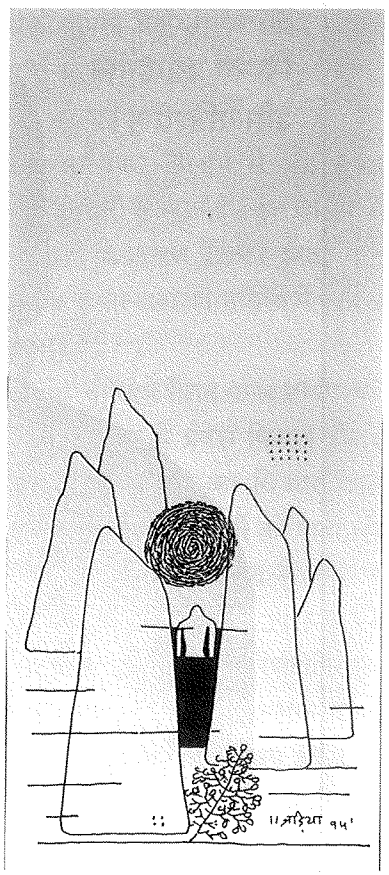

मुनि क्षमासागरजी की

अध्यात्म यात्रा

झरना कितनी सहजता से बहता रहता है।
पत्थर की चट्टानों से गुजरता है
तो कभी रेत के टीले को भी लाँघ जाता है
पर बहता रहता है।
हमें भी वैसे ही जीवन जीना है
झरने की तरह
निरन्तर प्रवाहमान
और गतिशील।

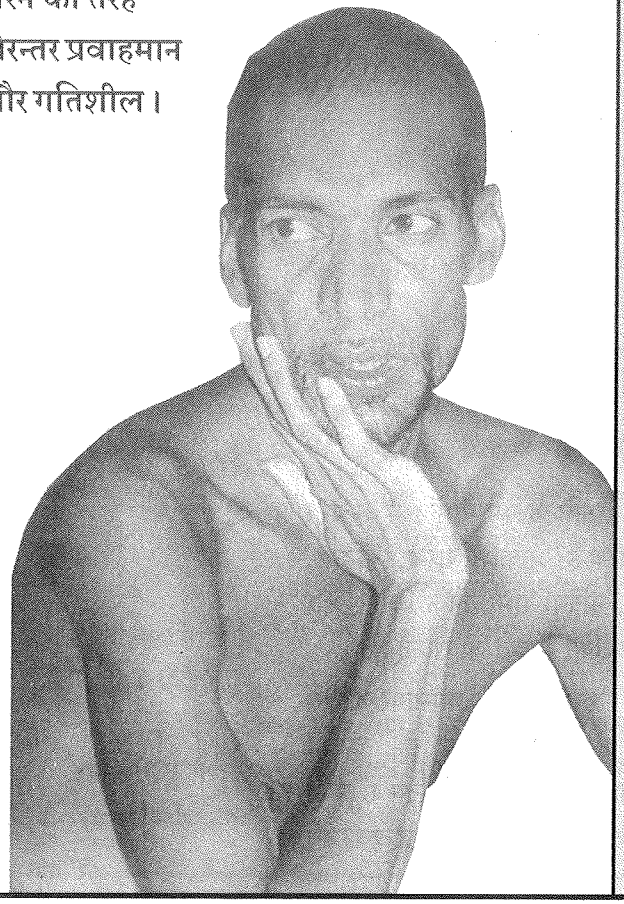

रोशनी का रोशनी से मिलन

- सिंघई जीवन कुमार जैन

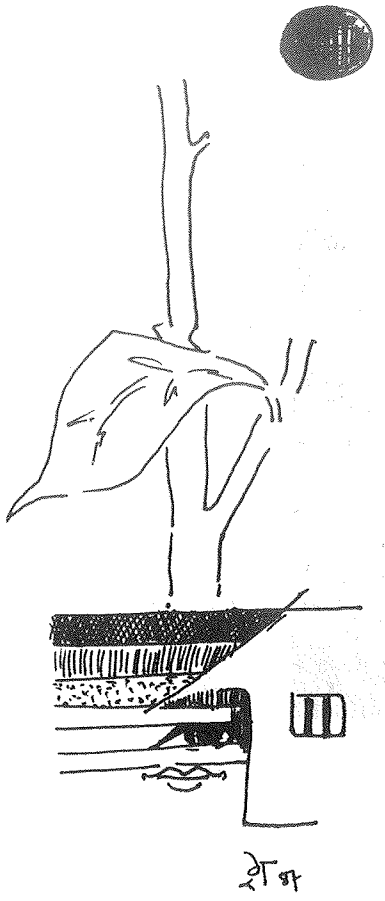

मेरे गृह नगर, सागर में वर्ष १९५७ के सितम्बर माह में तीसरी और अंतिम संतान का जन्म हुआ था। लाड़ले बेटे का नाम 'मुन्ना' रखा गया जो सार्थक था।

भारतीय संस्कृति के अनुसार, मुंडन आवश्यक है। अतः उक्त संस्कार हेतु मुन्ना को अपनी दादी मां श्रीमती स्वर्गीय चंपाबाई जी सिंघेन एवं मातेश्वरी श्रीमती आशा जी सिंघई के साथ श्री क्षेत्र महावीर जी (राजस्थान) ले जाया गया। वहां श्रीमती चंपाबाई जी सिंघई से पूर्व परिचित विदुषी ब्रह्मचारिणी कृष्णाबाई जी, संस्थापिका श्री महावीर जिनालय एवं श्राविका आश्रम से भेंट हुई। अणुव्रतधारी कृष्णाबाई ने इस बालक में महाव्रती के लक्षण देखकर इनका नाम वीरेन्द्र कुमार रखा जो भविष्य में सार्थक हुआ।

वीरेन्द्र ने शैशव सानंद सम्पन्न कर शैक्षणिक क्षेत्र में प्रवेश किया। शैशव का दुलार, शिक्षा का विकास अब उत्तरोत्तर अपनी ऊँचाईयों को पाता रहा और सागर विश्वविद्यालय से एम.टेक (भूगर्भ शास्त्र) किया। उपरान्त १० जनवरी १९८० को नैनागिर रेशंदीगिर क्षेत्र में वीरेन्द्र कुमार की क्षुल्लक दीक्षा जिनके दीक्षा गुरु परम पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी हुए। अप्रैल सन १९८० में आचार्य संघ सागर पहुंचा

उस समय उनके शिक्षा गुरु प्रोफेसर व्ही.के. नायक, मोराजी भवन, सागर में आचार्य श्री से मिले। उस समय श्री वीरेन्द्र कुमार जी के पारिवारिक श्री नेमिनाथ मंदिर में आचार्य श्री विद्यासागरजी, क्षुल्लक क्षमासागर जी के शिक्षा गुरु श्री व्ही.के. नायक एवं गृहस्थ जीवन के लौकिक पिता सिंघई जीवन कुमार भी उपस्थित थे। प्रोफेसर व्ही.के. नायक ने आचार्य श्री से निवेदन किया कि विद्यार्थी वीरेन्द्र कुमार के एम.टेक. डिपार्टमेन्ट से पृथक हो जाने से हमारा विभाग लूजर (Looser) हो गया। ''तब आचार्य श्री ने कहा कि ''प्रोफेसर सा. आप कहते हैं कि हमारा डिपार्टमेन्ट लूजर हो गया, सिंघई जी कहते हैं कि हमारा परिवार लूजर हो गया और मैं कहता हूँ कि मै गैनर (Gainer) हूँ। मैंने पत्थर उठाया है। कुछ समझ के उठाया है। पत्थर में प्रतिमा उकेरूँगा।''

आचार्य विद्यासागर जी की पुष्प वाटिका में खिला यह पुष्प जैन जगत में अध्यात्म की सुगन्ध बिखेर रहा है।

अपने परिवार में आदरणीय माँ, बड़ी बहन, बड़े भाई, भावज के प्रति पूर्ण निष्ठा का परिचय अनुशासित एवं व्यवस्थित जीवन विरासत में मिले मितव्ययता एवं परोपकार उनके गुण रहे।

वर्ष १९४६ में कर्नाटक में एक नक्षत्र का उदय विद्याधर के रूप में हो चुका था। सन १९६७ में विद्याधर, विद्यासागर बने और आचार्य श्री विद्यासागरजी का मध्यप्रदेश में बुन्देलखण्ड प्रवेश सन १९७६ में हुआ। सन १९७६ एवं १९७७ में लगातार दो चातुर्मास कुण्डलपुर क्षेत्र में हुए। वर्ष १९७८ का चातुर्मास श्री पार्श्वनाथ भगवान की समवशरण भूमि रेशंदीगिर नैनागिर में हुआ। इसी समय युवक वीरेन्द्र कुमार आचार्य श्री के संपर्क में आये और उनसे इतने प्रभावित हुए कि अपने युवा जीवन के २३ वें वर्ष में प्रवेश के साथ आचार्य संघ में प्रविष्ट हो गये और प्रकृति ने उन्हें मेरी गोद से उठाकर आचार्य श्री विद्यासागर जी की गोद में बैठा दिया और उन्होंने अपने गुरु द्वारा सार्थक नाम पाया 'क्षमासागर'। इस तरह 'मुन्ना' से 'वीरेन्द्र' और वीरेन्द्र से 'क्षमासागर' तीनों नाम सार्थक हुए।

अब वे मेरे नहीं अपने आचार्य श्री विद्यासागर जी के हैं। इस तरह एक रोशनी दूसरी रोशनी से मिली। जीवन धन्य हुआ।

- बड़ा बाजार, सागर (मध्यप्रदेश)

आत्मान्वेषी साधक की पारदर्शी कविताएँ

- डॉ. (श्रीमती) कुसुम पटोरिया

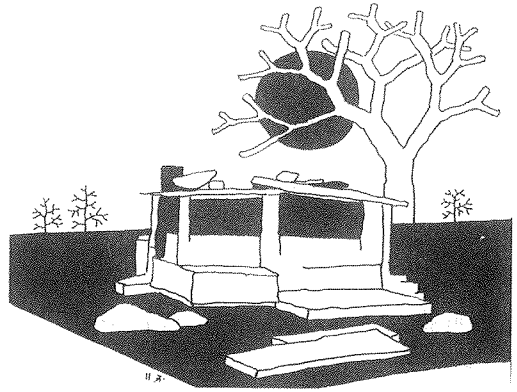

'पगडण्डी सूरज तक' के पश्चात मुनि क्षमासागर की कविताओं का दूसरा संग्रह 'मुनि क्षमासागर की कविताएँ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। शीर्षक ही गहरी अर्थवत्ता लिए हुए हैं, क्योंकि ये कविताएँ किसी आसक्त मन की तरंगें या वायवी कल्पनाएँ नहीं हैं, एक निःस्पृह निरासक्त पारदर्शी मन की पारदर्शी कविताएँ हैं। वीतरागता के साधक के चित्त की अनुभूतियाँ हैं। कृत्रिमता और कल्पनाजाल से मुक्त आत्म-सौंदर्य की अभिव्यक्तियाँ हैं। छन्दों के भार से मुक्त, मुक्त छन्द में निबद्ध हैं। अलंकारों के श्रृंगार से भी मुक्त सहज सौंदर्य से सराबोर हैं। भाषा जितनी सहज और सरल है, अर्थवत्ता उतनी ही गहरी है। उनके अन्तस्तल तक पहुँच पाना कुशल गोताखोर का ही काम है। उनके मर्म तक पहुँचने के लिए, विविध अर्थच्छटाओं को हृदयंगम करने के लिए सहृदय को भी साधकचित्त होना आवश्यक है।

संग्रह की कविताओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है, एक जिसमें आत्मानुभूति की साधना से निकले उच्छवास हैं, दूसरी इतर अनुभूतियाँ हैं, जो जीवन के मर्म का स्पर्श करते हुए सुभाषित हैं। प्रो. सरोजकुमार के शब्दों में-''इनमें कवि की सूक्ष्म

अन्तर्दृष्टि समकालीन जीवन स्थितियों से निराक्रोश मुठभेड़ भी करती हैं।'' इन कविताओं की सरलता उदात्तता में कवि का सरल, साधक, उदात्त चित्त पूरी तरह प्रतिबिम्बित हुआ है। इतनी सुन्दर कविताएँ सुन्दर चित्त से ही जन्म ले सकती हैं।

सफेद पर सफेद से लिखना और कागज सफेद ही रखना, उसी चित्त की सोच है, जो संसार में आकर भी कोरी चदरिया कोरी ही रखता है, रखना चाहता है। इन कविताओं में जो शुभ्रता है, उतनी शुभ्रता सामान्य मन के लिए अकल्पनीय है। बाह्य जगत से निर्लिप्त व्यक्ति के लिए ही दिखने का ख्याल झूठा होता है।

सफेद पर तो
सफेद ही लिखा जाता है
तब कितना भी लिखो
कागज
सफेद रहा आता है।

इसी भूमिका पर आरुढ़ चित्त को जगत खेल प्रतीत होता है।

वीतराग साधक के लिए निर्देश है कि वह अपना जीवन इतना संयमित व तपोपूत बनाए कि छोटे से छोटे जीव को भी कोई कष्ट न हो, साधक के इस आदर्श को इतने कम शब्दों में साकार किया है-

अभी मुझे
और धीमे
कदम रखना है,
अभी तो
चलने की
आवाज आती है।

निःशब्द कदम रखने की साधना, तपोपूत अहिंसक जीवन साधना है, जिस साधना मार्ग पर मुनिश्री चल रहे हैं। ऐसी अनेक छोटी-छोटी कविताएँ हैं कि उन सभी को उद्धृत करने का लोभ होता है। गंतव्य ऐसी ही कविता है-मुनिश्री यात्री हैं। लोग कुतूहल से पूछते हैं कितना चलोगे, कहाँ जाना है? पर मुनिश्री तो इस बार संसार की अनन्त यात्रा से विश्राम पाना चाहते हैं। भटकना तो अनादिकाल से होता रहा है। 'इस बार अपने तक आना है।' इसी अनुभव की दूसरी कविता है 'पहला कदम' - 'सारे द्वार खोलकर/बाहर निकल आया हूँ/क्या कोई विश्वास करेगा/कि यह मेरे भीतर प्रवेश का पहला कदम है।' अध्यात्म की कोख से ही उलटबांसियों का जन्म होता है। सांसारिक दृष्टि से संसार छोड़कर बाहर निकलना, आत्मसाधक के लिए अन्दर प्रवेश का पहला कदम है। ईश्वर निर्मल आत्मा है। स्वयं के दर्शन के बिना वर्षों तक पूजित प्रतिभा में भी ईश्वर के दर्शन नहीं होते।

'सान्निध्य', 'साक्षात्कार', 'लयातीत', 'एक अनुभूति', 'तुम्हारा होना', 'अन्ततः', 'मुश्किल है' आदि कविताएँ आत्म साधना की और आत्मसाधना की कठिनाई की एक झलक प्रस्तुत करती हैं। जीवन को निस्पृह बनाना 'कठिन लेकिन सुखद' है। संसार आत्मसाधक की उपलब्धि पर प्रश्नचिन्ह लगाता है- 'उपलब्धि' व 'प्रश्न और उत्तर' उनके उत्तर हैं। अपने हिस्से का आकाश 'छियाछाई' आदि कविताएँ स्व को पाने की उत्सुकता की कविताएँ हैं।

दूसरे वर्ग की कविताएँ वे हैं, जो जीवन के मर्मस्पर्शी सुभाषित हैं। 'दाता' जो कुछ नहीं जोड़ता, सब कुछ दान कर देता है, वास्तव में वही जोड़ता है। धनसंग्रह नहीं करता, लोकसंग्रह करता है। कुछ कविताएँ बचपन-किसी विशेष बचपन को नहीं-सामान्य बचपन को समर्पित हैं। खोता हुआ बचपन अपने साथ सरलता, सहजता और कुतूहल भी खो देता है। 'लोग हंसते हैं', 'झूठा सच', 'बड़े लोग' आदि इसी तर्ज की कविताएँ हैं।

बच्चे बड़े निष्काम हैं
कामनाओं से लदे
बड़े लोगों को
और बहुत से काम हैं।

निष्काम शब्द द्वयर्थी है। बच्चे निष्काम (कामना रहित) हैं, इसलिए वे निष्काम (काम रहित) हैं। कामनाओं से युक्त बड़े लोगों को बहुत से काम हैं।

चिड़िया, वृक्ष, नदी, समुद्र और सूरज उनके प्रिय प्रतीक हैं। इस कविता संग्रह में तो वे ही कवि से और कवि उनसे बतियाते या फिर संवेदनाओं को परस्पर बांटते नजर आते हैं। स्वयं कवि की स्वीकारोक्ति है-

अब जब
मैं कविता लिखता हूँ ....
जैसे सब
(आकाश, चिड़िया और नदी)
पूछते हों
कि हमारे सिवाय
तुम और क्या
लिखते हो?

अनहोनी एक और दो प्रकृति की संवेदनशीलता को उजागर करती हुई श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। प्रकृति से दूर जाकर मनुष्य कितना संवेदनशून्य हो गया है, यह सोचने के लिए विवश करती हैं।

तुमने सुना
कभी किसी वृक्ष ने
अपनी शाखाओं पर बने
पक्षी के घोंसले
अपने ही हाथों तोड़कर
नीचे फेंक दिये हों?

दूसरी कविता का अंश है-

तुमने देखा
अभी आंधी पानी तूफान में
वृक्ष से
पक्षी का घोंसला टूटकर गिरते वक्त
वृक्ष का पत्ता पत्ता न कांपा हो?
कि आंसुओं की तरह
फल फूल न गिरे हों?

आत्मकेन्द्रित मनुष्य से ज्यादा सदय और संवेदनशील है एकेन्द्रिय जगत्। वस्तुतः वनस्पति जगत् अपनी एक ही इन्द्रिय द्वारा मनोभावों तक को सूक्ष्मता से ग्रहण करता है। वैज्ञानिकों के अनुसार वनस्पतियाँ उन सूक्ष्म ध्वनियों को भी ग्रहण कर लेती हैं, जिन्हें मनुष्य के कान ग्रहण नहीं कर सकते। ये उन अल्ट्रावायलेट किरणों को भी ग्रहण कर लेती हैं, जिन्हें मनुष्य के चर्मचक्षु नहीं देख सकते। इनकी इन्द्रियाँ अव्यक्त हैं, पर अन्तर चेतना तीव्र है।

'प्रतियोगिता' आधुनिक प्रतिस्पर्धा भरे जीवन को प्रतिबिम्बित करती कविता है, पर अभिव्यक्ति बड़ी सरल है। सारी ही कविताओं में कही कोई उपदेश नहीं, उपालम्भ नहीं, केवल वस्तुस्थितियों और मनः स्थितियों के चित्र हैं, जो बहुत कह जाते हैं। सोचने के लिए विस्तृत आकाश छोड़ जाते हैं।

मैं उसी दिन
समझ गया था
जब मैंने
ईश्वर होना चाहा था,
कि अब
कोई जरूर
ईश्वर से
बड़ा होना चाहेगा।
और अब सब
ईश्वर से बड़े हो गये हैं
कोई ईश्वर नहीं है।

कविता में व्यंग्य का तेवर नहीं, पर कविता व्यंग्यगर्भ है। व्यंग्यगर्भ कविता के लिए उदाहरणीय एक सुन्दर कविता इस संग्रह में है-

यहाँ के लोग
वक्त के
बड़े पाबंद हैं
कल का काम
आज नहीं करते।
और कल?
कल तो कभी नहीं आता

'सिर्फ अपने लिए' एक शाश्वत सत्य को उजागर करती कविता है, जीने के लिए यह भ्रम जरूरी है कि कोई हमारे लिए मरता है, पर मनुष्य अपने लिए ही जीता और अपने लिए ही मरता है। याज्ञवल्क्य इस सत्य को उद्घाटित करते हुए कह चुके हैं कि पत्नी को पति और

पति को पत्नी अपने लिए ही प्रिय है न कि पत्नी के लिए पत्नी या पति के लिए पति प्रिय है।

वक्ता से श्रोता और दाता से ग्रहीता अधिक कीमती होता है, इसका एहसास तभी होता है, जब देने का मन हो और लेने वाला करीब न हो।

ज्ञानी और पण्डित में अन्तर है। पण्डित के पास प्रश्नों के निर्धारित शास्त्रोक्त उत्तर होते हैं अपना कुछ नहीं होता, पर पण्डित ज्ञानी समझा जाता है। ज्ञानी होने का अर्थ है स्वानुभवी होना, अपने विचार होना। पण्डित का मस्तिष्क शास्ताओं के विचारों से लबालब भरा होता है। स्वयं के विचार के लिए वहाँ कोई स्थान रिक्त नहीं होता। परप्रत्ययनेयबुद्धि का होना ज्ञानी होना नहीं है। 'काश हम सचमुच ज्ञानी होते' में यही पीड़ा है।

संग्रह में लगभग सत्तर छोटी-छोटी कविताएँ हैं, हर कविता की अभिव्यक्ति सहज है। प्रत्येक कविता हमें विचारप्रवण करती है। परोक्ष सन्देश भी देती है। अन्तिम कविता 'नदी आई है' कुछ दीर्घ है। यहां भी अपने आपको पाने की लालसा है, स्वयं को पाने के आनन्द का स्वप्न है।

आज के दौर में जहां कविताएँ प्रायः या तो सपाटबयानी हैं, या फिर इतनी दुर्बोध कि विरसता उत्पन्न करती हैं, इतनी सुन्दर और व्यंजनागर्भ कविताओं को पाना एक अनिर्वचनीय आनन्द है। श्रेष्ठ कविता का लक्षण है कि पाठक की कल्पना के लिए एक पूरा पृष्ठ खाली छोड़ दे, मुनि क्षमासागर की कविताएँ इस कसौटी पर खरी उतरती हैं।

छपाई उत्कृष्ट है। मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। विशेष यह है कि वर्तनी की एक भी भूल ढूंढ पाना असंभव है। इसके लिए प्रकाशक निश्चित ही बधाई व धन्यवाद के पात्र हैं।

- आजाद चौक, सदर,
नागपुर-४४० ००१ (महा.)

'परमात्म समर्पण और गुरू के प्रति समर्पण हमें सहज बनाता है और सहजता में जीना ही सबसे बड़ी साधना है।

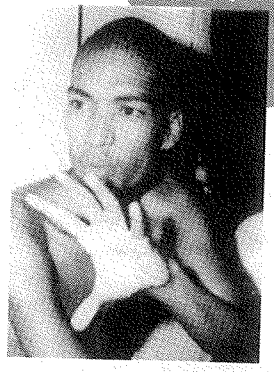

सावधान

दर्पण
तोड़ने से पहले
इतना
जरूर देख लेना,
कहीं
दर्पण में बना
तुम्हारा प्रतिबिंब
टूट न जाए।

- मुनि क्षमासागर

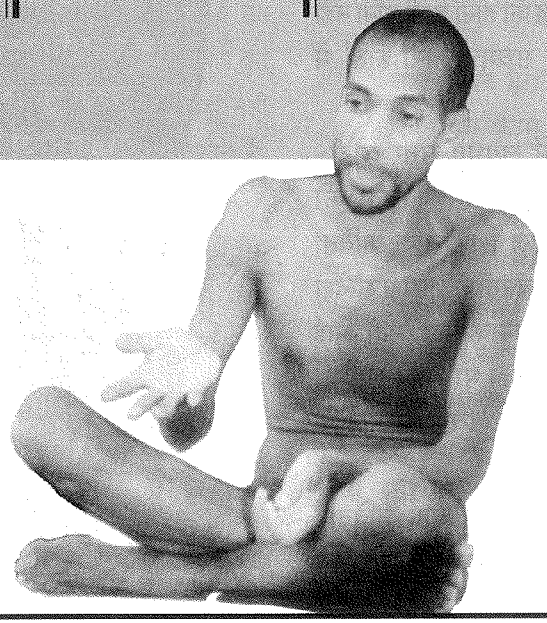

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे

- श्रीमती राजकुमारी रांधेलिया

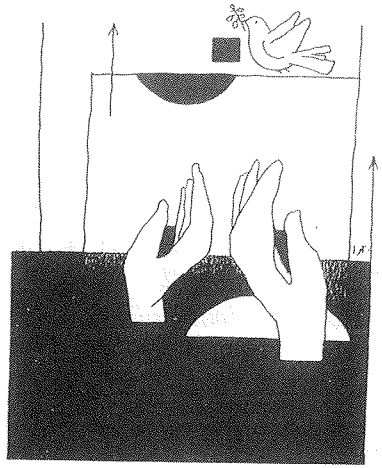

मुनि श्री क्षमासागर जी से णमोकार मंत्र सुनना एक अभूतपूर्व अनुभव है। नाभि से उठता, धीर गंभीर स्वर का गुंजन, नाद-ब्रह्म में रसलीन कर तन्मयता की ऐसी स्थिति में पहुँचा देता है कि श्रोता सुध-बुध खो, पंचपरमेष्ठी को ध्वनि के माध्यम से अनुभूत करता प्रतीत होता है। मंत्र की समाप्ति पर वर्तमान जगत में लौटना कुछ अटपटा सा लगता है फिर कुछ पलों में सबकुछ सामान्य हो जाता है।

संत क्षमासागर, कालेज के वीरेन्द्र कुमार और परिवार के मुन्ना को यह विलक्षण कंठ उनकी दादी सिंघैन चम्पाबाई की विरासत है। सिंघई जीवन कुमार, पिता का गहन अध्यात्म और अनन्य साधुता इनमें प्रगट हुई। दादी व पिता के संस्कार ही नींव में हैं।

बालक की माँ याने मेरी भाभी को इनकी दीक्षा के उपरान्त कुछ समझाने की कोशिश करती वे कह उठती थीं, ''बाई तुम हमें कित्तऊ समझाओ हमने तो चटाई में मूड धरी और हमें तो मुन्ना ई मुन्ना दिखात है।'' उस ममतामयी का आंसुओं से भीगा मुख देख कंपकंपी आ जाती थी। कड़कड़ाती ठंड में भाई अरुण कुमार को जब याद आता कि उनका भाई दिगम्बर मुनि बन शीत परीषह जय

का तप, तप रहा है तो वे अपना पहना हुआ गरम कोट उतार फेंकते थे।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रथम शिखर जी ससंघ यात्रा की संयोजक कटनी जैन समाज थी। दीक्षा के बाद उनका यह प्रथम कटनी आगमन था। मैं भी दर्शनार्थ गयी। उनकी अधोमुखी दृष्टि ऊपर नहीं उठी, न आशीर्वाद की मुद्रा में करतल उठा। नमोस्तु कर सजल नयन मैं चुपचाप लौट आयी। मैंने चौका लगाया। पडगाहन भी किया। पर वे आगे बढ़ गये।

दूसरी बार कटनी आगमन हुआ। आजकल सभी बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई में ज्यादा रुचि है। अभिभावक भी इन्हीं स्कूलों का चयन करते हैं। अतः बच्चों को न तो ठीक से हिंदी भाषा आती है और न ही धार्मिक शिक्षण हो पाता है। इन्हीं बातों पर विचार कर मुनि श्री की सत्प्रेरणा से कटनी समाज की २५ महिलाओं को देवशास्त्र व गुरु के समक्ष शपथ दिलाई कि वे रात्रिकालीन पाठशाला के द्वारा बच्चों को धार्मिक संस्कार प्रदान करें। ''आचार्य शांति सागर रात्रिकालीन पाठशाला'' की शाखायें संगीत, नृत्य, चित्रकला, अभिनय व अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित कर बालक-बालिकाओं को मंच प्रदान करती हैं व करीब ३०० बच्चे धार्मिक परीक्षा देते हैं। इस रात्रिकालीन पाठशालाओं का संचालन मैं विगत १२ वर्षों से कर रही हूँ। कटनी समाज को उनकी यह अनुपम भेंट है।

मढ़िया जी में आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ विद्यमान थे। हजारों की भीड़ थी, जहाँ संघ विराजमान था मैं भी हॉल के भीतर जाने का प्रयास कर रही थी। पर स्वयंसेवक जाने ही नहीं दे रहे थे। मेरे धैर्य का बांध टूट गया, मैं जोर से चीखी, ''हमारा बेटा हमीं को दर्शन नहीं मिल रहे।'' सारे साधुओं की दृष्टि दरवाजे पर गई। मेरा प्रयास सफल हुआ। इसी तरह विगत अक्तूबर माह में हमारा बुन्देलखण्ड यात्रा संघ जब शिवपुरी मुनि श्री के दर्शन करने गया तब भी इसी घटना की पुनरावृत्ति हुई। क्षमासागर जी की प्रेरणा से शिवपुरी में ''अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान'' का आयोजन था। बेहद भीड़ थी। स्वयंसेवक भीतर जाने ही नहीं दे रहे थे वहाँ भी मैं जोर से चिल्लाई महाराज के कान तक बात पहुंची व मैं दर्शन पा सकी। भरी सभा में महाराज ने मेरी आपबीती सुनाई और मैं कृतार्थ हुई।

धाय, गाय, बकरी के दूध व फलों के रस के द्वारा जतन से पाला यह सुकुमार शिशु, जैनेश्वरी दीक्षा की असि धारा का पथिक बन कर चल पड़ेगा यह बात किसी की कल्पना में भी न आयी थी। भावुक, अति-संवेदनशील यह युवा संत आचार्य श्री विद्यासागर जी की शिष्य मंडली का प्रखर नक्षत्र है। इनकी अनोखी प्रवचन शैली है। श्रोता इनके साथ हंसते व आंसू बहाते सहज ही देखे जाते हैं।

''मैत्री भाव जगत में मेरा,
सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे,
उर से करुणा स्रोत बहे।''

विश्व मैत्री का संदेश वाहक यह साधु जब ये पंक्तियाँ गाता है तब अपार करुणा के रस से प्राणी मात्र की आत्मायें उनसे तादात्म्य कर शांति प्राप्त कर लेती हैं। उन पावन पुनीत चरणों में मेरा नमोस्तु निवेदित है।

- द्वारा-सिंघई राजाराम तुलसीराम, रघुनाथ गंज, कटनी (म.प्र.)

मुनिश्री के वचनों का लाभ

- शशी जैन,

आज मुझे महावीरजी आए हुए तीन दिन हो गए हैं। बस डेढ़ घन्टे में मुझे बम्बई की गाड़ी पकड़नी थी और 'बड़े बाबा' के डेरे से विदाई लेनी थी। मन कदाचित नहीं कर रहा था। सो शीघ्र ही भारी मन से बाबा के दर्शन करके मैं मुनिश्री क्षमासागर जी के कक्ष में कुछ क्षण उनके अमृत वचन सुनने की इच्छा स्वरूप उनके द्वार पर पहुँची। रोज की तरह आज भी लोगों का तांता लगा हुआ था। इसीलिए उनके पास बैठने की अभिलाषा पूरी न हो सकी। दूर बैठकर उनको अपलक देखते रहने का निश्चय किया ही था कि अनायास उनके मुख से रविन्द्रनाथ टैगोरजी की कविता की कुछ पंक्तियाँ निकली। मैं दंग रह गई, जिसका भावार्थ यह था कि 'गुरु चरणों की रज से धूल-धूसरित होता हुआ एकटक किसी कोने में बैठा हुआ, मौन होकर उनकी मुखाकृति को ही निहारता रहूँ।' मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मैं असमंजस में थी कि यह मुनिश्री की अपने गुरु के प्रति भक्ति थी या उन्होंने मेरे मन के उद्‌गारों को स्फटिकमणि के समान प्रत्यक्ष देखकर कहे। फिर मैं वहाँ कुछ देर बैठकर मुनिश्री के सान्निध्य का लाभ लेती रही। आखिर वक्त की कुटिल गति के आगे मुझे झुकना पड़ा। लेकिन रेल में बैठकर अपने और मुनिश्री के भावों में सामंजस्य खोज करती रही लेकिन अभी तक असफल रही।

- ए५/६, पहला माला, नॉर्थ बॉम्बे सोसायटी, जुहू रोड, जुहू, मुम्बई

गागर अपनी भर ले

॥ १ ॥
निर्मल मन ले एक युवा
जब श्री चरणों में आया।
दृष्टिपात किया गुरुवर ने
मन उसका लहराया॥

॥ २ ॥
लौकिक परिचय हुआ जगत का
गुरुवर तब मुस्काए।
वीतराग का मैं हूँ राही
तुम क्या लेने आये॥

॥ ३ ॥
अन्तर्मन में उथल-पुथल थी
क्या माँगू, क्या देंगे।
यह निर्णय आचार्य करेंगे
खुद ही चयन करेंगे॥

॥ ४ ॥
युवा मौन, वायु निःशब्द
तब गुरुवर खुद ही बोले।
जग का सुख नहीं पास है मेरे
मुक्ति चाहे ले ले॥

॥ ५ ॥
शब्द, निःशब्द की ओर बहाये
राग विराग में बदले।
परम तत्व जो मुझे चाहिये
शुद्ध अवस्था करले॥

॥ ६ ॥
अर्चन वन्दन भूल गया वह
चरण पकड़ कर बोला।
मुक्ति पथ का पथिक बनूँगा
जग का सुख सब छोड़ा॥

॥ ७ ॥
पूर्ण परीक्षा ली गुरुवर ने
क्षुल्लक दीक्षा दीनी।
क्षमासागर की लहर-लहर में
जिनवाणी भर दीनी॥

॥ ८ ॥
नैनागिरी में फिर गुरुवर ने
शिष्य को मुनि बनाया
देकर अपना रूप उसे
भवसागर में तैराया॥

॥ ९ ॥
प्रेम बाबरा गुरु शिष्य की
चरण वन्दना कर ले।
सागर से सागर निकला है
गागर अपनी भर ले॥

- प्रेम नारायण उपाध्याय 'प्रेम'
- रैन बसेरा, ओव्हर ब्रिज के नीचे,
गुना, म.प्र.

● जया जैन ●

श्रद्धा, आस्था और विश्वास की रत्नमाला के एक-एक मणि में समाहित है, परम श्रद्धेय मुनि श्री क्षमासागरजी की क्षमा, करुणा, मृदुता और आत्मानुशासन व आत्मज्ञान।

अप्रैल, १९९४ मुनि श्री क्षमासागरजी के प्रथम बार पावन दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला। वह मेरे जीवन का अद्भुत क्षण था। मैंने शोध कार्य हेतु ''जैन धर्म में प्रतीक का कलात्मक पक्ष एक अध्ययन'' विषय चुना था व कार्य की शुरुआत भी कर दी थी। परन्तु इस विषय पर अलग से पुस्तके उपलब्ध नहीं हो पा रही थीं। उसी जिज्ञासावश मैं साहस कर मुनि श्री के सम्मुख पहुँच गई। मैंने शोध विषय में आने वाली कठिनाईयों के बारे में उनसे पूछा। मैंने सोचा भी नहीं था कि वह इतनी सहजता और सरलता से मेरी बात सुनेंगे और अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर मुझे देंगे। यह समय पाकर मेरा मन आनन्द-विभोर हो उठा। दूसरे दिन महाराज जी ने मुझे

दो बजे का समय दिया। मैं समयानुसार मंदिर पहुँच गई। उन्होंने गंभीरतापूर्वक मेरे शोध विषय के बारे में विस्तार से चर्चा की। उनकी ज्ञान बोधक चर्चा ने मेरी जिज्ञासाओं का समाधान ढूँढ निकाला व सही दिशा दी। प्रतिदिन यही क्रम चलता रहा।

एक दिन मुझे पता चला कि महाराज जी विहार करने वाले हैं। मैं अचंभित सी रह गई। मैंने कहा कि यदि आप यहाँ से विहार कर जाएंगे तो मेरा शोध कार्य कैसे पूरा होगा? मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा कि विहार तो करना ही था। मैंने जब आपका शोध कार्य प्रारम्भ करवाया है तो पूर्ण भी मैं ही करवाऊँगा। आप तो बस कार्य करिए। उनके इन शब्दों ने मेरी आस्था और विश्वास के अंकुर को पल्लवित कर जो सम्बल दिया वह अविस्मरणीय है। गुरुजी के छत्रछाया से बड़ा आशीर्वाद मेरे लिए और क्या हो सकता था। उनके आशीषों के साथ शोधकार्य को मैं निडरता और लगन के साथ पूरा करने में जुट गई। गुना, मंडीबामौरा, बीना, झाँसी, ओरछा आदि स्थानों पर जाकर मुझे उनके पावन दर्शन का अवसर मिला ही साथ में शोधकार्य में आनेवाली समस्याओं का समाधान भी। उनके अथक प्रयासों से मेरा शोधकार्य अक्टूबर १९९८ में पूर्ण हो सका था।

शोधकार्य के निमित्त से मुझे 'मुनि श्री क्षमासागरजी' के रूप में परम श्रद्धेय गुरुवर मिले वह मेरे जीवन की अमूल्य निधि है। गुरु वास्तव में उस सिन्धु के समान है जिसमें अनेकों छोटी-छोटी नदियों को अपनी मंजिल मिल जाती है और सिन्धु अपने में उन नदियों को साम्यभाव से समा लेता है, जो उसकी विशाल हृदयता व असीमता का द्योतक है।

मुनि श्री के प्रति अन्तर्मन में श्रद्धा व विश्वास का जो बीज मैंने बोया था वह दिन-प्रतिदिन पल्लवित होता जा रहा है। भविष्य में महाराज श्री का शुभाशीष व मार्गदर्शन मिलता रहे इन्हीं भावनाओं के साथ उनके पावन चरणों में मेरे शत-शत-वंदन।

- एफ-३, गवर्नमेन्टस् क्वार्टर्स कॅम्प, ग्वालियर-४७४ ००१ (म.प्र.)

प्रतिमा औरों के लिए जीवन की वस्तु है,
पर मेरे लिए तो वह जीवन प्राण है।

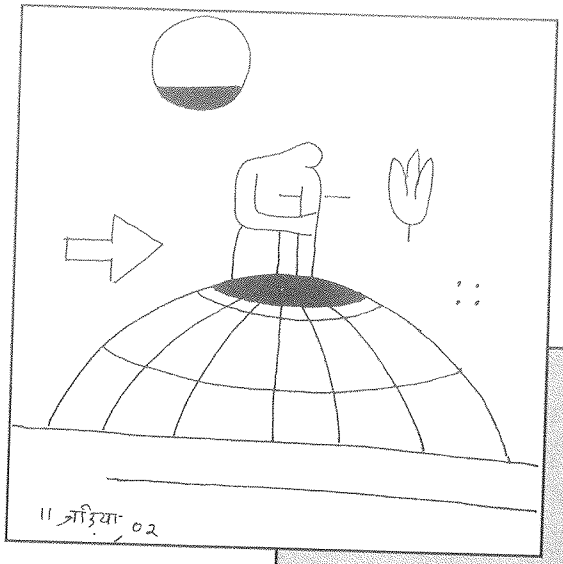

बुन्देला के लाल

सुधा पटोरिया

हे बुन्देला के लाल
तुझको शत शत करूँ प्रणाम
तीनों माताओं की शान,
तुमको शत शत करूँ प्रणाम
इक माता थी भोली भाली
जैत हारी की वह थी बेटी
उस रत्न-गर्भा ने जाया ऐसा पूत
कि सागर हो गया निहाल-।
दूजी माता थी गो-माता,
गलियों-गलियों भटका करतीं
शीतल स्नेहिल छांव दी उनको
दुग्ध सिंचित आशीष मिलेगा।
तीजी माता धरती माता
जिस कोख से स्वयं जन्म ले
तुमने बुन्देलखंड को अमर कर दिया।
हे बुन्देला के लाल
तुझको शत शत करूँ प्रणाम।।

ये पंक्तियाँ समर्पित करते हुए मुनिवर क्षमासागर को नमोस्तु करती हूँ। बारंबार श्रद्धानत हूँ, प्रणत हूँ उन मनीषी के समक्ष-

जिनका खिलखिलाता अल्हड़ बचपन देखा। युवा होता मेधावी छात्र जीवन देखा... और वह क्षण भी अनुभूत किया जब शांत ज्वालामुखी से शनैः शनैः राग, द्वेष, मोह, माया लावे की तरह बहते चले गए। अनंत ज्ञान, अनंत ऊर्जा, अनंत चैतन्य की ज्वलंत शक्तियों से प्रभावित व्यक्तित्व का धीरे-धीरे मुनि रूप में रूपान्तरण होता गया।

लौकिक माता-पिता, भाई-बहिन के हृदय की उस मर्मान्तक पीड़ा और विछोह के उस मर्मस्पर्शी क्षण को अनुभूत किया। उस समय आप कितनी निर्विकारी शांत तथा सौम्य मुद्रा में आसीन थे। आत्मसौंदर्य से चेहरा दमक रहा था। तन, मन और प्राणों में अनायास ही वीतरागी किरणें फूट पड़ी थीं। देह के प्रति अनासक्ति देह के श्रृंगार में बदल गई। वीतरागी चितवन और अंतरंग मृदुता से मुस्कुराता हुआ चेहरा ज्ञानवान मुनि के रूप में चमक उठा।

दीक्षा देते समय धरती, आकाश तथा आराध्य गुरुदेव विद्यासागरजी के अंतःकरण के कण कण से आशीषों की बौछार हो रही थी। वातावरण बोझिल होते हुए भी उत्सवी हो उठा था। ऐसा उत्सव जहाँ केवल आत्मा का श्रृंगार हो रहा था। आत्मा रूपी नववधू चली थी मदमाती होकर अपने प्रियतम के गेह के दुर्गम पथ पर।

अपने गुरु आचार्य श्री विद्यासागर के प्रति अगाध श्रद्धा व समर्पण ही आपको इस दुरूह पथ पर खींच ले गया। क्योंकि गुरु ही हमारे चलते फिरते तीर्थ हैं जो भव समुद्र से पार कराते हैं। अपनी आत्मान्वेषी पुस्तक में आपने बड़ी श्रद्धा भाव से ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ उद्धत की हैं ''ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जिहाज, आप तिरें पर तारहीं ऐसे हैं श्री ऋषिराज, ते गुरु मेरे मन बसो।''

आपने पूरी तरह से अपने गुरु के सिद्धान्तों एवं दर्शन को आत्मसात किया। हमारी संस्कृति एवं धर्म के प्राण मुकुट मणि श्री विद्यासागर जी की पूरी पूरी छवि मानो आपमें अंकित हो गई। वही आकर्षण वही प्रभाव फैल जाता जहाँ जहाँ तुम्हारे चरण पड़ते। इस गुरु शिष्य की जोड़ी को जन्म दे कर धरा धन्य हो गई। पावन हो गई। मानो महावीर और गौतम गणधर के इतिहास की पुनरावृत्ति हो गई हो इस युग में।

जहाँ-जहाँ ये चरण पड़े वहाँ प्रेम, मैत्री व मानवता की सरिता बहने लगती।

आपके प्रेम ने जगत के सभी जीवों तक विस्तार पाया। भूखी-प्यासी भटकती गायों को गो-शालायें तथा संरक्षण मिला। प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान करना विशेष रूप से सराहनीय है। छात्रों का उत्साह बढ़ाने के लिए इससे प्रेरक प्रसंग और क्या हो सकता है?

गत वर्ष अक्टूबर में जब हमारा बुन्देलखंड यात्रा संघ आपके दर्शनों को शिवपुरी पहँचा तो इस अनोखे उत्सव का आयोजन हो रहा था। गुरु स्वयं शिष्यों का सम्मान करने को तत्पर थे। स्थान स्थान पर बैनर्स लगे हुए थे। ''मुनि श्री क्षमासागर द्वारा अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान।'' रात ११ बजे जब हम शिवपुरी पहुँचे तब भी शिवपुरी सजग, सतर्क थी। सड़कों पर जगह जगह व्यवस्थापक एवं स्वयंसेवक बाहर से आए अतिथियों के स्वागत में आतुर पलक-पांवड़े बिछाए खड़े थे। हमारा स्वागत तो और भी अपनत्व से किया गया। जब स्वागतार्थियों को ज्ञात हुआ कि हम उनके आत्मीय स्वजन थे कभी। हमारे ठहरने की इतनी शानदार व्यवस्था बनी कि हम कृतकृत्य हो गए। लंबी यात्रा से थका हमारा तन, मन आपके संरक्षण में हल्का-फुल्का हो आया।

हम बहुत अर्से के बाद आपके दर्शन करने पहुँचे थे। आपके आत्मीय भरे संदेश हृदय से हृदय तक पहुँचते रहे थे पर मन होते भी देर होती गई। कितनी पुलक भरी थी मन में आपके दर्शन की। शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। सुबह ११ बजे का समय आपसे मिलने का निर्धारित हुआ था। हम आहार देने भीड़ भरी सड़कों पर भागते दौड़ते आहार स्थल पर पहुँचे शुद्ध वस्त्र धारण कर मन में दुविधा लिये जब आपके समक्ष पहुँचे तो आहार समाप्ति पर था। मुझे देखते ही आपने इशारा किया और मैं इक्षु रस की दो अंजुलियाँ ही दे पाई। मन यह सोच कर तृप्त हुआ कि भगवान ऋषभदेव ने भी तो प्रथम आहार इक्षु रस का ही लिया था। मैं धन्य हो उठी थी आपके सान्निध्य एवं छत्रछाया में क्षणमात्र के लिए खड़ी रह कर। लगा जैसे किसी नन्हें शिशु के मुख में प्यार भरा ग्रास दिया हो।

फिर आया वह स्मरणीय क्षण जब हम सब आपके समक्ष बैठ कर वार्तालाप कर सके थे। आपके णमोकार मंत्र पाठ की संगीतमय सुरीली आवाज में बुआ जी (आपकी दादी) जैसी कशिश थी। दादा दादी एवं पिता की विरासत ने ही यह वीतरागी पथ दिया था। आये दिन छुल्लकों तथा मुनि महाराजों के चौके लगे रहते

थे। यहीं परंपरा जेठजी तथा जीजी (आपकी माँ एवं पिताजी) ने आगे बढ़ाई। बचपन से ही इस वातावरण का इतना असर पड़ा कि आप स्वयं इस वीतरागी पथ पर निकल पड़े। आपके चेहरे पर माँ की मुस्कान की स्पष्ट झलक दिखी। सरलता, मदुलता एवं सहृदयता माँ से ही विरासत में मिली जो कि आपकी 'मैं चुप' कविता में मुखर हो उठी है। ''मेरी सरलता और कोमलता को लोगों ने कायरता कह कर मजाक बनाया।'' सचमुच में माँ की विरासत में मिली है यह निश्छलता और भोलापन तथा दादी की विरासत में सधा सुरीला रागमय कंठ स्वर।

आपके सान्निध्य में बैठने की तथा घंटों धर्मचर्चा की तीव्र इच्छा लिए हम गए थे पर- आपको उस आयोजन के बहुतेरे कार्य के निर्देश आदि देने थे। जहाँ महावीर स्वयं गौतम गणधर के संघ की प्रतीक्षा में रत हो वहाँ विघ्न न बनने का निश्चय कर हमें अतृप्त मन से, भारी पावों से वापसी का निर्णय लेना पड़ा। शायद आपके मन में भी यह बोध उभरा था। आपने पूछा भी कि आप लोगों को ऐसा तो नहीं लग रहा कि मैं पर्याप्त समय नहीं दे पाया? पर आपको क्या पता कि उस छोटे से साक्षात्कार में हम आपका ढेरों आशीर्वाद आपसे बार-बार मिलने का आकर्षण और भी न जाने क्या-क्या भर लाए।

हमारी स्मृति मंजूषा के खजाने का अमूल्य रत्न बन गया है वह, स्मरणीय समय जो हमने आपके साथ गुजारा। हम सब बुन्देलखंड की तीर्थयात्रा पर निकले थे। सारे तीर्थों के साथ हमारे लिए शिवपुरी भी एक तीर्थ बन गया जहाँ आपके प्रिय दर्शन हुए थे। नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

- ओम गुरुकुल सोसाइटी, सेक्टर १९, नेरूल, नवी मुम्बई

संस्मरण

मैं जाती तो मासूमियत चेहरा, मां का पल्ला पकड़ मुस्कराते स्वागत, विस्मरणीय है। थोड़ी ही देर में हाथ में नाश्ता-पानी लेकर आते। साथ में मीठी मुस्कान लाये, वही भोला मासून चेहरा आज भी आंखों में झूलता है। तपस्वी वही हैं-सहसा फूली नहीं समाती। सदैव उनके चरणों में नतमस्तक पाती हूँ।

- रमाकांति पटोरिया,
सिविल लाइंस, कटनी

प्रेरणा स्रोत

- रंजना जैन पटोरिया

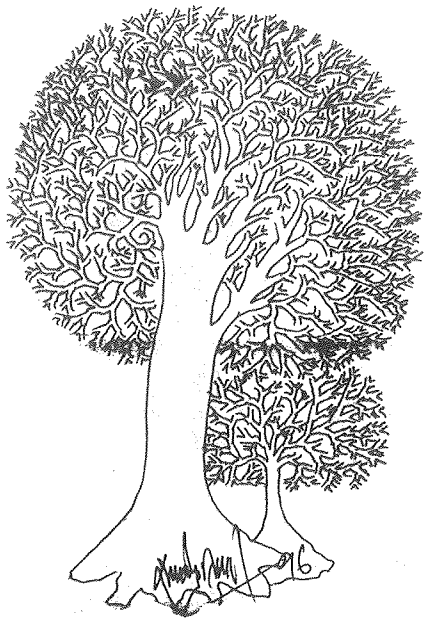

मुनिश्री के लिए अपनी कल्पना के छोटे से फलक पर विभिन्न छवियों को अंकित करने का संकल्प लिया है, परन्तु इसमें बहुत सारी कठिनाइयाँ हैं। जिन घटनाओं को स्वयं देखा नहीं, जिनके बारे में विस्तार से सिर्फ सुना ही है, उन्हें अपनी ओर से कैसे और किस शैली में अंकित किया जाए? यह सोचकर ही परेशान हूँ। फिर भी मेरे भावों की तूलिका यदि कहीं विस्तार को असीम व अथाह न दिखा पाई हो तो इसे मेरी विवशता जानकर अपनी सहानुभूति देने से इंकार मत करिएगा।

मुनिश्री तो निरन्तर गतिशील हैं, उन्हें किसी नाम व देशकाल की सीमाओं में बांधना सम्भव नहीं है। फिर भी उनका सामीप्य पाने की लालसा व कहना चाहिए, बहती नदी को रोकने की इच्छा हमेशा रहती है। मैं हमेशा चाहूँगी, कि उनसे जो भी सीखा, वह सभी से कहने का सुख मैं पाऊँ। सभी के साथ में भी उनके गुण गाऊँ। उनकी यह कविता जिनमें उन्होंने हमें मंदिर जाने हेतु प्रेरित कर यह लिखा है।

ये मन्दिर
इसलिए कि हम
आ सकें
बाहर से
अपने भीतर
ये मूर्तियाँ
अनुपम सुंदर
इसलिए कि हम
पा सकें
कोई रूप
अपने में अनुत्तर
और
श्रद्धा से झुककर
गलाते जाएँ
अपना मान-मद
पर्त-दर-पर्त निरंतर
ताकि
कम होता जाए
हमारे
और प्रभु के
बीच का अंतर।

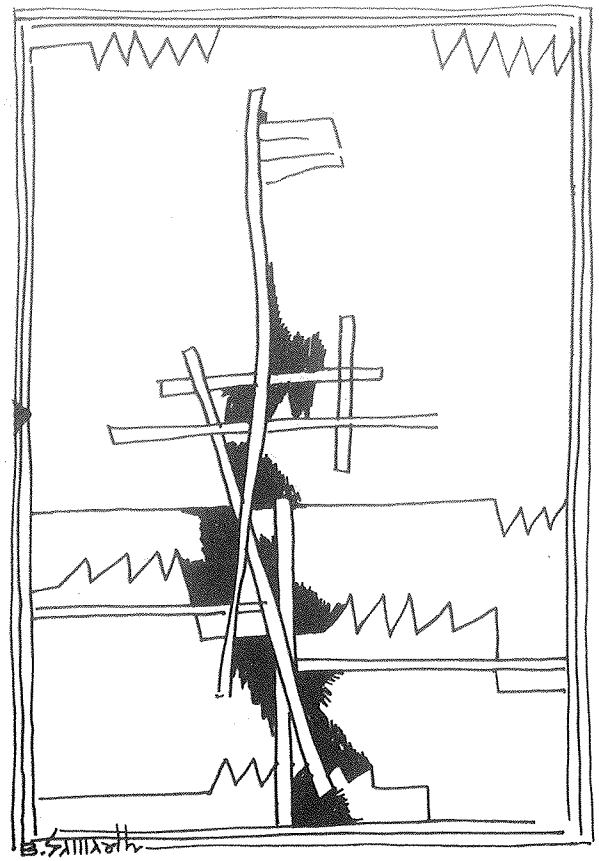

इतने सरल रूप में उन्होंने सारी युवा-पीढ़ी को यह बात समझा दी, जो हम अपने बच्चों को ही जिंदगी भर नहीं सिखा पाते। युवा पीढ़ी में जैन धर्म के प्रति श्रद्धा लाने हेतु उन्होंने शुभ-संकल्प लिया है, और यह सिर्फ मुनिश्री जैसे चिंतक के हाथों ही संभव था। उन्होंने व्यक्ति के भीतर बंद पड़े कपाट पर जबरदस्त दस्तक दी है जिससे वे सफलतम यात्रा कर सकें।

मेरे लिए वे हमेशा प्रेरणा स्रोत ही रहे हैं। उन्होंने हमेशा कहा-"Be Practical" संसार में रहना है, परिस्थितियों से समझौता करो, औरों को सुख देकर ही सुख पा सकती हो। रहने दो, आगम पुराण, शास्त्रों की बातें, जो सामने है, जो सच है, उसे ग्रहण करो और सामंजस्य बनाकर चलो। सच, उस समय से मेरे जीवन का दृष्टिकोण

ही बदल गया, कभी निराशा हाथ ही नहीं आई, किसी से कोई अपेक्षा ही नहीं की तो उपेक्षित होने का प्रश्न ही नहीं।

मुझे याद है जब मैं ६ साल की थी मेरे नानाजी, मामाजी, मम्मी सभी रात में (१० जनवरी १९८०) नैनागिर से वापस लौटे, तीनों ही शांत हाथों में कपड़े लिए, आकर बैठ गए। तब नानी ने पूछा-''काए वीरेन्द्र कहाँ गओ।'' तब मामाजी ने अपने आपको संभालते हुए दृढ़ होकर कहा-''तुमाओ मोड़ा अपने आत्मकल्याण को निकल गओ उने दीक्षा ले लई। इतना सुनते ही माँ की ममता नहीं रुक पाई वे रात भर रोती ही रहीं। कुछ समय पश्चात् जब हमने होश संभाला, तब सभी यही कहते, उन्होंने हमें सन्मार्ग दिखाया है, हमें भी उसी रास्ते पर चलना है। परन्तु हमने अभी तक क्या किया, कुछ नहीं, सिर्फ सांसारिक उलझनों में फँसे हुए हैं। मन में विश्वास है कि अंतस की ज्योति को ना बुझने देने का सहारा जिन्होंने दिया है, वे ही प्रेरणास्रोत रहेंगे।

जब भी उनकी वाणी से झरते अमृतवचन सुनने मिलते हैं, हृदय भर आता है, आँख आँसुओं से भीग जाती है। परन्तु उन आत्मीय क्षणों की स्मृति मुझे सहारा व प्रेरणा देती है।

आज भी उनसे दूर रहकर उन्हें अपने समीप पाती हूँ, कभी इस दूरी का अहसास नहीं होता सचमुच आत्मा के निकट रहना ही सच्चा सामीप्य है।

मुझे
कहना है, अभी
वह शब्द
जिसे कहकर
निःशब्द हो जाऊँ।
मुझे
देना है अभी
वह सब
जिसे देकर
निःशेष हो जाऊँ।
मुझे
रहना है अभी
इस तरह
कि मैं रहूँ
लेकिन
'मैं' रह न जाऊँ।
(मुनि श्री क्षमासागरजी)

- सिविल लाइन्स, कटनी (म.प्र.)

केवल कर्म, केवल ज्ञान, केवल व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है। कर्मी के हाथ, ज्ञानी के चक्षु और भक्त का हृदय इन तीनों के समन्वय से त्रिवेणी संगम होता है। मानव जीवन सार्थक होता है।

दोहे

जिसके तट पर खेलती रहती है दिन रात।
उस तट मौजों की करूँ, क्या तुमसे मैं बात॥
सुख की बिछि बिछात॥

निज स्वभाव के भाव का, किया सुधामृत पान।
उसके बल से शुभाशुभ, रागादि हुए म्लान॥
निर्मल सहज निदान॥

देख देख करके जिसे बढ़ती जाती प्यास।
तृप्ति जहाँ संतृप्त हो, होय मुदित उल्लास॥
सुख रस राचे रास॥

निज पर निर्भरता कभी, बनी न मात्र विचार।
स्वस्थ, संतुलित आश्वस्त, रहा सदा व्यवहार॥
प्रकृति सदा उदार॥

बरस बरस आनन्द घन, भिगो रहे मम देश।
अब विकल्प के वास्ते, रहा न कुछ भी शेष॥
कैसा होत नरेश॥

अब कर्मों की मोम सी, लगी पिघलने बाढ़।
निस्तरंग मलयज करे, रे सुख का संचार॥
रोम रोम निर्भार॥

- देवेन्द्र कुमार जैन
आनन्द भवन, तारण-तरण मार्ग, विदिशा-४६४ ००१ (म.प्र)

संस्मरण

क्षमा सागर उर्फ वीरेन्द्र ने खूब आम खिलाये

राजेन्द्र पटोरिया

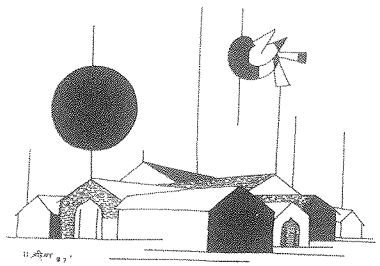

अभी भी बचपन के उस वीरेन्द्र की आवाज कान में गूंजती है जब वह मुझे कक्का-कक्का कहकर पुकारता, झूला झुलता, मस्ती करता। दुबला, गोरा व बातूनी वीरेन्द्र शुरू से चंचल तो था ही। बड़ा भाई अरुण सीधा व कम बात करने वाला था। मेरी प्यारी सी भाभी (वीरेन्द्र की माँ) मुझसे कहती ''लल्ला जब भी तुम सागर आत हो वीरेन्द्र तो तुमसे चिपको रहत है।''

जब मैं छोटा था प्रायः प्रत्येक वर्ष गर्मी की छुट्टियों में सागर चला जाता था। एक माह कैसे गुजर जाता पता ही नहीं लगता था। मेरी फुआ (श्रीमती चम्पाबाई) का बहुत प्यार मिलता था मुझे। मेरी बुआ बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, उनका गला बहुत सुरीला था वे भजन व गीत गातीं तो लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। पटोरिया परिवार की सागर में कई जगह रिश्तेदारी होने के बावजूद कोई भी व्यक्ति जब सागर जाता तो रिश्तेदारी में न रुककर फुआ के घर में रुकता। उनके रहते किसी ने अन्य जगह रुकने की हिम्मत तक नहीं की। सबके प्रति उनकी आत्मीयता बरसती थी।

हमारी भाभी (वीरेन्द्र की माँ) बहुत ही आत्मीय थीं। बड़े मीठे बोल बोलती थीं। सुबह से लेकर शाम तक दूध, नाश्ता, खाने का पूरा-पूरा ध्यान रखती। समय निकालकर मेहमानों के साथ बैठतीं व बुन्देलखंडी बोली में बड़ी प्यारी-प्यारी बातें करती थी।

श्री जीवन भइया (वीरेन्द्र के पिताजी) का मेरे प्रति बहुत दुलार तथा अपनापन है। वे बोलते बहुत कम हैं, परन्तु मुझसे ढ़ेर सारी बातें करते। उनके तीनों बच्चे संतोष, अरुण व वीरेन्द्र भइया से बहुत कम बात करते व घबराते थे। जब भइया मुझसे ढ़ेर बातें करते व मुझे घबराया न पाकर ये तीनों बड़े आश्चर्यचकित होते, उस समय मैं अपने आपको गर्वीला महसूस करता था।

बड़ा बाजार (सागर) के तीन मंजिला मकान में तीसरी मंजिल पर

कमरा व छत है। गरमी में मैं, संतोष, अरुण व वीरेन्द्र इसी छत पर सोते थे। चूँकि फुआ, भइया, भाभी उसके नीचे माले पर सोते थे इसलिए किसी का डर नहीं था, काफी रात तक सभी गपशप करते रहते थे। वीरेन्द्र तो मुझसे चिपका ही रहता था। उन्हीं दिनों जीवन भइया के खेत से ढ़ेरों कच्चे आम आते थे, उन्हें सबसे ऊपर के कमरे में फैलाकर ''पाल'' लगाया जाता था। इस ''पाल'' लगाने की प्रक्रिया से आम धीरे-धीरे पकते रहते थे। सुबह होते ही वीरेन्द्र व संतोष पके हुए आम ढूँढते व मुझे जगाकर कहते कक्का-कक्का १५-२० आम पक गए हैं उठो जल्दी खा लो। हम लोग बिना मुँह धोये ही फुर्ती से आम खाते, छिलके व गुठली उसी ''पाल'' के नीचे कोने में दबा देते। भाभी ऊपर आतीं, आम टटोलती उन्हें पके आम नहीं मिलने पर चली जातीं। यह प्रक्रिया ५-६ दिनों तक चलती। भाभी हम लोगों की चालाकी ताड़ लेतीं व जूठी गुठली, छिलके एक टोकने में भरकर सामने रखकर कहतीं-''काय लल्ला चुपके-चुपके, चोरी-चोरी सारे पके आम खा जात हो। अब भइयां पूंछ हैं, अब तक आम नहीं पके तो तुम लोग चुप रहियो, हम बोल देहें की कुछ आम तो पके थे, हमारी जीभ ललचाई हमने थोड़े से खा गए व थोड़े लल्ला को खिला दिये, लल्ला वे तुम्हारा नाम सुनकर गरम नहीं होंगे।'' उसके बाद तो ढेरों आम पक जाते, कोई समस्या नहीं रहती, खूब छककर आम खाते, मौज उड़ाते।

श्री जीवन भइया की गांधी गंज में थोक गल्ले की दुकान थी व आढ़तिया का काम भी चलता था। बड़ी प्रतिष्ठित दुकान मानी जाती थी। गरमी में अनाज का सीजन होने के कारण भइया शाम के समय खाना खाने घर नहीं आ पाते थे, उनके लिए एक नौकर डब्बा ले जाता था। मैं भी कभी-कभी भइया के साथ दुकान चला जाता था पर ''अन्थऊ'' के समय घर आ जाता था। संतोष व वीरेन्द्र मेरी बाँट जोहते रहते थे, मेरे पहुँचने पर संतोष पटा-मोंदरा लगाती व थाली रखती। भाभी गरम-गरम पुड़ी निकालकर, उड़द की करकरी दाल व सब्जी परोसती, संतोष व वीरेन्द्र मुगद के लड्डू का डब्बा मेरे सामने रख देते। वीरेन्द्र मेरी थाली में एक साथ ३-४ मुगद के लड्डू डाल देता, भाभी मुस्कराती रहतीं व कहतीं-खा लो लल्ला वीरेन्द्र बड़े लाड़ से खिला रहा है अपने कक्का को। मैं थोड़ा झेंपता। जब तक मैं सागर रहता यह सिलसिला रोज चलता।

भइया के मकान में नीचे के कोठे में गाय बंधती थीं, मैं व वीरेन्द्र कभी नीचे चले जाते, गाय को घास खिलाते, वीरेन्द्र

तो गाय के बच्चे से लिपट जाता व ढ़ेरों प्यार जताता। उनके मन में जानवरों के प्रति बहुत प्यार था।

कालेज की पढ़ाई के दौरान ही मुझे कोल बोर्ड आफिस, छिन्दवाड़ा में नौकरी मिल गई। अब सागर जाना एकदम छूट सा गया। फुआ गुजर चुकी थीं।

अरुण का विवाह सिवनी में प्राचार्य श्री शिखरचन्द जैन की सुपुत्री से हुआ। मैं सागर नहीं जा पाया था, पर विवाह में सम्मिलित होने हेतु सिवनी पहुँच गया था, उस समय मेरे गले में बहुत पीड़ा थी। संतोष व वीरेन्द्र मिले व मेरी असहनीय पीड़ा देखकर बहुत दुखी हुए। वीरेन्द्र बार-बार पूछता कक्का आपके गले को क्या हो गया है तथा दुखी रहता। उसे समझाता की डाक्टर बीमारी का पता नहीं लगा पा रहे हैं परन्तु डाक्टर के अनुसार घबराने जैसी कोई बात नहीं है।

समय बीतता गया पता लगा वीरेन्द्र एम.टेक कर रहा है। फिर एक दिन समाचार मिला कि वीरेन्द्र छुल्लक हो गया है, मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर समय चक्र आगे बढ़ते रहा, फिर एक दिन समाचार मिला कि उसने आचार्य श्री विद्यासागर महाराज से दीक्षा लेकर मुनि क्षमासागर हो गया है।

इस बीच मेरा आफिस छिन्दवाड़ा से नागपुर आ गया था। कई बार वीरेन्द्र के मुनि के रूप को देखने की लालसा हुई। कार्यक्रम भी बनाया पर ऐन वक्त पर ऐसा कोई कार्य निकल आया कि वीरेन्द्र उर्फ क्षमासागर के दर्शन लाभ नहीं ले पाया।

मेरे छोटे फूफाजी परम आदरणीय डॉ. दरबारीलाल कोठिया, जैन धर्म के प्रकाण्ड पंडित, प्रख्यात साहित्याचार्य जो पहले वाराणसी में संस्कृत के प्रोफेसर थे, वे बनारस छोड़कर अपने चचेरे भाई प्रकांड जैन विद्वान व प्रसिद्ध लेखक पंडित बंशीधरजी व्याकरणाचार्य जी के पास आकर रहने लगे थे। हमें खबर मिली कि वे बीमार हैं। मैं व हमारे मौसेरे भाई श्री कमलेशचन्द्र सिंघई उर्फ (कम्मू भइया) जो उन दिनों अमरावती से नागपुर आकर बस गए थे, उनके सुपुत्र दीपक सिंघई ने नागपुर की एक फर्म में नौकरी ज्वाइन कर ली थी। अतः भइया तथा उनकी सुपुत्री आरती भी नागपुर आ गये थे। फूफाजी से मिलने बीना गए। वहाँ पता लगा कि श्री क्षमासागर वहाँ से ३०-३५ किलोमीटर दूर मुंगावली में संघ सहित रुके हैं। फूफाजी ने भी सलाह दी कि पहले क्षमासागर जी के दर्शन कर आओ। मैं और कम्मू भइया सुबह रवाना होकर दोपहर तक मुंगावली पहुँचे। वहाँ

पहुँचते ही हमने वहाँ के व्यवस्थापकों से क्षमासागरजी के दर्शन की इच्छा प्रगट की। वहाँ के व्यवस्थापकों को हमने क्षमासागर जी से अपने संबंध भी बताये। व्यवस्थापकों ने बड़ी आत्मीयता से हम लोगों का स्वागत किया। हाथ-मुँह धोकर हम जैसे ही ऊपर गये वहाँ क्षमासागरजी बैठे थे तथा उनके पास ही कुछ दूरी पर संघ के अन्य मुनि व छुल्लक थे। मैं इस घबराहट में था कि इनमें से कौन वीरेन्द्र उर्फ क्षमासागर हैं उन्हें मैं पहचान कैसे पाऊँगा। एक लम्बा अरसा जो गुजर चुका था। जैसे ही मैं नजदीक गया तो एक बड़ी आत्मीय आवाज ने मेरा स्वागत किया। 'राजेन्द्रजी आये हैं' यह उन्होंने अपने संघ के लोगों को बतलाया। मैं समझ गया कि ये आवाज क्षमासागरजी की ही है, मैं तो अवाक सा रह गया कि इतने लम्बे अरसे बाद उन्होंने मुझे कैसे पहचान लिया। क्योंकि मेरी दाढ़ी तथा बड़े बालों के कारण मेरा रूप ही बदला हुआ था। क्षमासागरजी ने अपने संघ के लोगों से जैसे ही कहा राजेन्द्रजी आए हैं तो संघ के एक-दो मुनि ने तुरन्त कहा अच्छा खनन भाररती के संपादक पधारे हैं। वहाँ व्यवस्थापकों को निर्देश दिया गया कि पहले हमें भोजन शाला में ले जायें बाद में चर्चा करेंगे। हम लोगों ने भोजन करने के बाद जैसे ही क्षमासागरजी के पास जाना चाहा तो पता लगा कि वे अभी ध्यान में हैं २ से २॥ बजे तक लोग उनके दर्शन करेंगे तथा ३ बजे वे धर्म ज्ञान देने क्लास में पढ़ाने चले जायेंगे। हम दोनों ठीक २ बजे उनकी कुटिया में पहुँच गए। हमसे पहले ही काफी लोग उनके दर्शन हेतु खड़े थे। २ बजकर २० मिनट पर जब थोड़ी भीड़ छटी तब क्षमासागरजी से थोड़ी बहुत चर्चा हुई। चर्चा में उनके साहित्य बाबत, मेरे द्वारा लिखा गया साहित्य, मेरी पत्नी डॉ. कुसुम पटोरिया द्वारा लिखी गई पुस्तक 'यापनीय संघ' बाबत चर्चा हुई। ढ़ाई बजते ही उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया, हम अतृप्त मन से उठ गए। उसके बाद पता लगा कि उनके शाम तक के कार्यक्रम निश्चित हैं, अतः फिर से दर्शनलाभ व चर्चा संभव नहीं है। हम लोग उसी दिन शाम को बीना लौट आये। फूफाजी तो हमारी बाट ही देख रहे थे। उन्हें इस बात की बड़ी प्रसन्नता थी कि हम लोगों ने क्षमासागरजी के दर्शन कर आये।

कुछ माह बीत जाने के बाद हमें समाचार मिला कि फूफाजी काफी बीमार हैं। मैं व कम्मू भइया बीना के लिए रवाना हो गये। बीना जाकर पता लगा कि फूफाजी का तो स्वर्गवास हो गया है। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने उन्हें नेमावर तीर्थक्षेत्र में समाधिकरण दिलाया

है। यह भी पता लगा कि जब उन्हें आचार्य श्री के पास नेमावर जैन तीर्थक्षेत्र ले जाया जा रहा था उसके एक दिन पहले ही मुनि क्षमासागर महाराज उन्हें आशीर्वाद देने उनके निवास तक पहुँचे थे। हमने जब पं. बंशीधरजी के सुपुत्र श्री वैभव शाह से पूछा कि क्षमासागर महाराज कहाँ हैं तो उन्होंने बतलाया कि बीना से २०-२२ कि.मी. दूरी पर तीर्थक्षेत्र में हैं। मुझे तीर्थक्षेत्र का नाम ख्याल नहीं आ रहा है। मैं व कम्मू भइया उनके दर्शनों हेतु पहुँचे। अबकी बार उनसे काफी देर तक चर्चा होती रही। मन थोड़ा सा तृप्त हुआ। क्षमासागर जी ने हमें एक सुझाव दिया कि पटोरिया घराना पंडित दरबारीलाल कोठिया के नाम से एक ट्रस्ट बनाये तो अच्छा होगा।

इसके बाद पता तो जरूर लगता रहा कि वे कहाँ हैं पर चाहकर भी उनसे मिलने का संयोग नहीं बन पाया। मेरी पत्नी कुसुम तो उनके दर्शन के लिए एक लम्बे अरसे से लालायित है। पर चाहकर भी संयोग नहीं बन पाया। यह संयोग कब बनेगा? जिस दिन भी बनेगा वह दिन हमारे लिए बड़ा महत्व का दिन होगा।

इस बीच उनकी कविताओं के संकलन की कुछ पुस्तकें प्रो. सरोजकुमार ने इन्दौर से हमें भिजवाई।

उनकी छोटी-छोटी कविताएँ पढ़कर मैं तो दंग ही रह गया। छोटी कविताओं के माध्यम से बहुत बड़ी, गहराई तक पहुँचाने वाली बात कह देना अपने आप में एक कठिन कार्य है। उनका कविता संग्रह 'पगडंडी सूरज तक' की पुस्तक समीक्षा मैंने 'खनन भारती' (जिसका मैं संपादक हूँ) में भी छापी है। इसकी समीक्षा प्रख्यात उपन्यासकार-कहानीकार रज्जन त्रिवेदी ने की है। वे पुस्तक को पढ़कर बहुत अभिभूत हो गये व कहने लगे-जीवन में पहली बार इतनी अच्छी कविताएँ पढ़ रहा हूँ। इस पुस्तक की दो छोटी कविताएँ-अनहोनी-१ व अनहोनी-२ मैंने खनन भारती के 'अहिंसा विशेषांक' में भी प्रकाशित की हैं। कई पाठकों ने इसको पढ़ा तथा प्रभावित हुए तथा मुझसे क्षमासागरजी के बारे में जानकारी भी प्राप्त की।

बड़ी इच्छा है उनका समग्र साहित्य पढ़ने की तथा उनका प्रवचन सुनने की। (उनके प्रवचन के एक-दो कैसेट सुने हैं-बड़ी प्रभावित करने वाली तथा मन को अंदर तक छूने वाली वाणी सुनने को मिली।) यह संयोग भी कब आ पाएगा बस इसका इंतजार है। उनके चरणों में मेरी बारम्बार वंदना।

- सम्पादक, खनन भारती, आजाद चौक, सदर, नागपुर-४४० ००१ (महाराष्ट्र)

तुम आस्थाओं के परम तीर्थ

बयारों ने दस्तक दी हौले-हौले, मन के झरोखे पर।
कि
सूरज उदित हुआ एक ओर, शाश्वत के क्षितिज पर
अवनि पुलक उठी कि ये कौन? अवतरित हुआ
अंधकार को चीरकर
जैसे, पके हुए मेघों की पृष्ठभूमि पर
धवल हंस उज्ज्वलित हुआ हो।
हे गुरु, प्राण प्रतिष्ठित देव मूरत
जिस क्षण धरे धरा की रज पर चरण कमल
पाषाणों के शाप चुक गए, अहिल्या बनकर मुक्त हो गए।
हे उजाले के घनेरे पुँज
अज्ञान की निद्रा में लिप्त को झकझोर गए।
हे महाउत्सव मैं रीति गागर सी
तुम आस्थाओं के परम तीर्थ हो गए।
पावन जल की बूँद-बूँद प्यासे कंठ में
उतारने चली आई हूँ
स्वीकृति दें तो परम, सारे पापों की गठरी
उज्ज्वल करने आई हूँ।
हे ज्ञानामृत, बरसो एक बार दरिद्र पर
थके थकित पर, वरदहस्त की छाया दे दो,
उतर जाए थकान अनन्त जन्मों की
आपके चरणों में दूर ही सही
एक रत्ती जगह दे दो।
मेरा क्षणभंगुर अस्तित्व समा जाएगा
जीते जी मोक्ष का आनन्द पा जाएगा।
सच्चिदानंद में समाकर
सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् हो जाएगा।

- साधना मिश्रा

एफ-२, डी-२, कीर्ति होटल के ऊपर, सेक्टर १५, नैरुल, नवी मुम्बई

एक ज्योति पुंज सा आया वह महामना

- अरुणा जैन

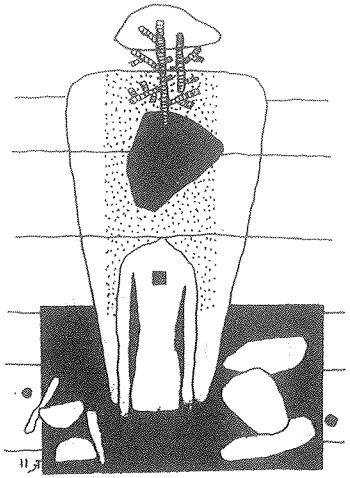

ज्योति प्रतीक होती है रोशनी की। ज्योति प्रतीक होती है प्रकाश की। ज्योति प्रतीक होती है असत् से सत् की ओर प्रेरित करने की। और जब यह ज्योति अपनी सम्पूर्णता लिए हो, अपनी समग्रता लिए हो तो पुंज के रूप में वह हमें एक अलौकिक प्रकाश की आभा दे जाती है और फिर हम भर उठते हैं उस अद्वितीय प्रकाश से।

मेरे जीवन को भी २४ मई, १९९४ को एक ऐसे ही 'ज्योति पुंज' की आभा मिली। जो मुझे प्रेरणा दे गया परमार्थ को पाने की, जो मुझे प्रेरित कर गया स्वार्थ से विमुख होने की। और दे गया वह आत्मीयता, जो व्यक्ति कई बार अपना पूरा जीवन दाँव पर लगाने पर भी नहीं पा-पाता।

मुझे लगा मैंने भी तो चाही थी यही आत्मीयता जो भी मेरी आँखों को नम कर जाए। मैंने भी चाही थी वह जीवन दिशा जो मेरे जीवन को नया बोध दे और वह मैंने इस व्यक्तित्व के माध्यम से पाई है।

महान व्यक्ति किसी एक का नहीं होता, वह सबका होता है। स्वयं क्षमासागरजी ने लिखा है कि-

'एक नन्हीं बदली प्रेम से भरकर मुझसे
निरन्तर बरसने को कह गई
इस तरह मेरी जिन्दगी
सबकी हो गई।'

महान व्यक्ति सबको समाहित कर लेता है। सागर की तरह इतना सामर्थ्यवान होता है और हाँ समुद्र मन्थन के बाद अमृत की प्राप्ति होती है। इस सागर से भी हमने अमृत ही पाया है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम अपनी अंजुलि में कितना-कितना भर पाते हैं।

वैसे भी तो भर पाना, श्रद्धा का सूचक है। मैंने लिखा था एक बार कि ज्ञान के इस जलधि से एक बूंद ज्ञान भी यदि अपनी अंजुलि में भर लूंगी तो सबसे बड़ी श्रद्धा होगी, इस गुरुवर के प्रति मेरी।

वैसे भी श्रद्धा के भाव होते ही ऐसे हैं। यह किसी के कहने से नहीं उपजते। यह तो अन्तस के किसी कोने से निर्मल-निर्झर की तरह बहते हैं तब शब्द मौन हो जाते हैं। आँखें भीग जाती हैं और फिर अन्तस के ही किसी कोने से महाप्राण ध्वनि सी ध्वनि गूँजती है नमोस्तु की।

तो क्यों हम किसी के प्रति झुकते हैं? इसका मतलब है कि जरूर हमने उन चरणों में कुछ तो पाया है या फिर जरूर कुछ शेष है जो हमें पाना है। सच पूछिए तो कहीं न कहीं इस व्यक्तित्व की भावनाएँ, इनके विचार हमको अपना स्पर्श दे जाते हैं।

वैसे भी किसी व्यक्ति के विचार उसकी भावनाओं का प्रस्तुतीकरण होते हैं। वह उसके अन्तर्मन का प्रतिबिम्ब होते हैं और फिर हमें लगता है कि हम इस प्रतिबिम्ब में अपने को देखें कि हम अपने में कहाँ तक प्रकाश भर पाए हैं। कहाँ तक हमने अपने को अंधकार से बचाया है। वैसे भी ऐसे प्रतिबिम्ब हमें सजगता देते हैं कि हम अपने जीवन को विकृतियों से दूर हटा लें। और सच पूछिए तो ये प्रतिबिम्ब मुझे भी एक संकल्प सा दे गया। स्वयं को बदलने का, अपने विचारों को परिष्कृत करने का। मुझे लगा कि यदि मेघ जैसे बरसकर अपने जीवन में किसी की उष्णता को कम न कर सकूँ तो उस उष्णता को कम करने का तोष तो पैदा कर सकूँ। वृक्ष की छाया यदि न दे सकूँ तो उस छाया का आभास तो दे सकूँ। परोपकार के समय संकीर्णता नहीं इन्सानियत घर कर जाए। सरलता और सहिष्णुता मेरी हर सांस में समा जाए। काश! यदि इन भावनाओं के साथ मैंने शेष जीवन जिया तो मैं समझूँगी कि यही मेरी भावनाओं का सच्चा समर्पण है। इस ज्योतिपुंज को। मेरे शत-शत प्रणाम। इस महामना को नमोस्तु!

- सी२/२०/२-४, सेक्टर १६, वाशीनगर, नई मुम्बई (महाराष्ट्र)

पुष्प श्रद्धा के

श्रीमती राजकुमारी जैन

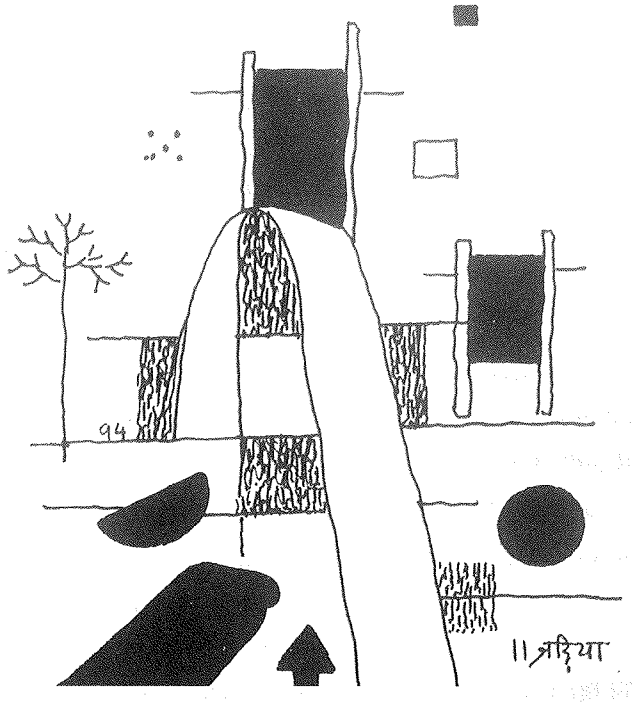

दीप उनका, रोशनी उनकी, मैं जल रहा हूँ,
रास्ते उनके, सहारा भी उनका, मैं चल रहा हूँ,
प्राण उनके हर सांस उनकी, मैं जी रहा हूँ।

परम पूज्य संत शिरोमणि 'आचार्य विद्यासागरजी को समर्पित एक शिष्य जो बालक 'वीरेन्द्र कुमार' थे क्षमासागर कैसे बने? कितनी ज्ञान पिपासा थी उनके मन में। ज्ञान के दीपक का उजियारा भर वे अपने परम गुरु के चरणों में समर्पित होकर धन्य-धन्य हो गए। ऐसे मुनि श्री क्षमासागरजी के चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का एक प्रयास कर रही हूँ। निश्चय ही कुछ त्रुटियाँ होगी पर विश्वास है मुझे अल्पमति जान क्षमा कर देंगे क्योंकि वे तो क्षमा के सागर हैं।

श्रद्धेय माँ आशादेवी का लाल जो इतना सरल, सौम्य, दयामय था, उनके जिज्ञासु नयन जो सदैव कुछ खोजते थे, अपलक आकाश को निहारते थे किसे मालूम था वो बालक वीतरागी मुद्रा अपना लेगा। ऐसी कठिन राह जहाँ पग-पग पर परीक्षा देनी होती है, जहाँ शरीर का भान लेश मात्र रह जाता, जहाँ केवल आत्मा को कुन्दन बनाना होता है।

बचपन से ही आत्म-साक्षात्कार की ललक थी। कभी माँ देखती कि जाड़ों की रात में भी उनका लाड़ला पढ़ाई करते करते चटाई बिछा सो जाता। कुछ भी एहसास नहीं चाह थी तो केवल कल्याण की। स्व के साथ-साथ जनकल्याण की भी। बस दृढ़ संकल्प, एक वैराग्य भाव, वीतरागता का बोध। और फिर अपने को गुरु के चरणों में सौंप कर ही चैन पाया और फिर धीरे-धीरे अपने गुरु के प्रिय शिष्य बन बैठे।

उनकी 'पगडंडी सूरज तक' एक अद्‌भुत काव्य है, जिसका एक शब्द गहरे पैठ जाता है कि- श्रद्धा से झुककर गलाते जाएँ, अपना मान मद पर्त-दर-पर्त निरन्तर ताकि कम होता जाए, हमारे और प्रभु के बीच का अंतर।

श्री क्षमासागरजी का यह गुण कि वह अपने गुरु की छोटी सी सीख को भी आत्मसात कर लेते हैं। उनकी पैनी दृष्टि भाँप लेती है कि यदि गुरु ने छोटी सी सीधी बात भी कही है तो उसमें बड़ा मर्म छिपा है। उदा. एक बार सब शिष्य आचार्य महाराज की सेवा में व्यस्त थे तो किसी की ठोकर से तेल की शीशी गिर गई। शीशी का ढक्कन खुला था सो तेल फैल गया। पर महाराज श्री मुस्कुराते रहे। फिर सुबह चर्चा करते करते बोले कि शिष्य और शीशी दोनों में डॉट लगाना कितना जरूरी है। इस छोटी सी बात में कितना बड़ा संदेश छिपा है।

संसार में विरक्ति, वैराग्य तथा स्वयं को जानने की उत्कंठा अवश्य ही पूर्वभव के संस्कारों के संयोग से संभव है। इच्छा शक्ति को संकल्प में बदलना भी मन का काम है, मन को प्रबुद्ध करना अपरिहार्य है। इस संसार की चमक-दमक में जो रचा नहीं वही श्रेष्ठ है।

मुनि श्री क्षमासागरजी जिनके मन में वैराग्य भावना घर कर गई, करुणा और वात्सल्य भाव जिनमें समा गया, ऐसे ज्ञानी सरल, तरल, आत्मीय गुरु के प्रति मेरे शत् शत् नमन। मेरे शत् शत् वन्दन। बारम्बार।

- डी-५१, अरेन्जा कॉम्प्लेक्स, सेक्टर-८, सी.बी.डी. नई मुम्बई-४०० ६१४

ज्ञान पिपासु

आरती सिंघई

नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!

बात १९८७ की है। हम भाई-बहिन बुआ से मिलने कटनी गए हुए थे। वहाँ पता चला कि एक विद्वान उच्चशिक्षा प्राप्त जैन साधु 'क्षमासागर महाराज' जी वहाँ आए हुए हैं। बचपन से जो कुछ जैन साधुओं के बारे में सुना था उससे मुझे कुछ भय मिश्रित जिज्ञासा थी कि मैं जैन साधुओं की दिनचर्या के बारे में थोड़ा बहुत जान सकूँ। जिनालयों से दूर आवास, साल में चंद दिनों ही देव दर्शन करना, क्रिश्चियन मिशीनरी स्कूल की अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई, विज्ञान की उच्चशिक्षा में लीन होने के कारण मैं जैनधर्म की बारीकियों से दूर ही रही। बचपन में माँ की सिखाई हुई स्तुति, मेरी भावना, भजन, आरती और दशलक्षण पर्व पर कानों में पड़ने वाली पूजा के शब्द, ध्वनि और पाठशाला का प्रथम भाग बस इतना ही जैन धर्म के नाम पर मुझे ज्ञात था। इसके परे जैन धर्म क्या है मैं अनभिज्ञ ही थी। पर जिज्ञासा मेरे भीतर हमेशा बनी ही रही और इसी जिज्ञासा के सहारे पहुँच गए मुनि श्री के आहार के समय मंदिर में। आहार को देखा, मन में कई प्रश्न थे। मुझे पता चला कि महाराज जी विद्यार्थियों से चर्चा करते हैं। तो मैं भी वहीं अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठ गई। मेरी भी बारी आई। महाराज श्री ने परिचय पूछा-मैंने कहा महाराष्ट्र से आए हैं। University में जीव जन्तुओं के बारे में पढ़ते हैं पर धर्म-ज्ञान शून्य है। मुझे भय था कि महाराज जी कोई नियम तो नहीं दिलाएंगे। मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ बल्कि उनसे Big-Bang Theory सृष्टि की रचना Molecular Theory विषय पर चर्चा हुई। फिर तो विज्ञान और धर्म का सन्तुलन धर्म के पीछे छिपा ज्ञान जैसे रात्रि भोजन का निषेध Solor Radiation, Magnetic Field, Bacteria, Virus का अपने शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है। श्रमण वैदिक

संस्कृति, क्रूरता रहित सौन्दर्य, शाकाहार जीवन शैली विषयों पर प्रतिदिन चर्चा होने लगी और फिर धर्म से जुड़ी धार्मिक क्रियाओं का मूल स्वरूप जैसे मंदिर की घंटियाँ और अभिषेक का मनुष्य के ऊपर Atoms और ions द्वारा प्रभाव न जाने कितने विषयों पर से अज्ञानता की परतें हटने लगी।

पहिले ग्रीष्मकालीन अवकाश का अर्थ मौज-मस्ती था पर अब यह अर्थहीन लगने लगा। जब भी वक्त मिलता है, मन करता है गुरुवर की वाणी सुनें। जब कटनी से लौटकर वापिस आए मन अपूर्व आनंद से भरा था। विभिन्न विषयों पर चर्चा, णमोकार मंत्र की ध्वनि और फिर आशीर्वाद के लिए उठा हाथ सब कुछ साक्षात्-सा लग रहा था। लगता है मानो इतनी दूर से भी महाराजश्री का आशीर्वाद हमारे ऊपर झर रहा है।

माँ के देहान्त के छह वर्ष व्यतीत हो चुके थे। एक खालीपन, सूनापन, ममता का अभाव उनके ममत्व में लिपटे क्षणों का स्मरण सभी कुछ तो लगता था। पर जबसे गुरुवर के दर्शन किए लगता है जैसे उनका आशीर्वाद परिस्थितियों से सामंजस्य करने की क्षमता मेरे भीतर पैदा कर रहे हैं। धर्म साहस और समता दोनों देता है यह मैं धीरे-धीरे अब समझ पाई हूँ। गुरु के आशीषों में शक्ति और प्रेरणा होती है। जिसे सिर्फ हम अनुभव ही कर सकते हैं वह अनुभव हमें जीने की एक नई दिशा देता है और पैदा करता है ज्ञान, उजाला और शक्ति का सिलसिला।

चार वर्ष व्यतीत हो गए थे पर महाराज श्री के दर्शन लाभ से मैं वंचित ही रही थी पर इस बार योग लगा और पहुँच गए 'हरि पर्वत' आगरा। महाराजश्री आहार के लिए निकल गए थे। हर क्षण अमूल्य था। समय सत्संग में बिता सकें यही अभिलाषा थी। आहार उपरान्त प्रश्नमंच चल रहा था। काफी संख्या में श्रावक बैठे थे नमोस्तु कर सबसे पीछे पंक्ति में बैठ गई। प्रश्न मंच का समय पूरा होने जा रहा था। कद छोटा होने के कारण बार-बार गर्दन को ऊँची कर दर्शन का लाभ बढ़ा रही थी। अचानक महाराज श्री का ध्यान गया। सभी के प्रश्नों का समाधान करते-करते ही बीच में आशीर्वाद के लिए उनका हाथ उठ गया। मैं नतमस्तक हो गई। सभा में उपस्थित सभी लोगों ने, जिनमें शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे मुड़कर देखने लगे। उस समय मुझे ऐसा लगा कि इन क्षणों में सबसे अधिक धनाढ्य मैं ही हूँ। यह अनुभव कहीं मुझे भीतर ही भीतर सुख दे रहा है।

- नेहरू नगर, २३/स्नेहा, कुर्ला ईस्ट, मुम्बई.

चाह

- योगेन्द्र कुमार जैन

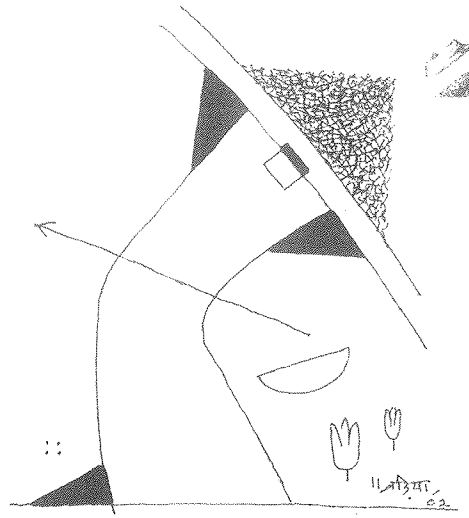

पूज्य महाराजश्री के बारे में जब मुझसे कुछ लिखने को कहा गया तो कुछ समय तो मुझे ऐसा लगा जैसे अंधे व्यक्ति से प्रकाश को परिभाषित करने के लिए कहा गया हो। मैं असमंजस में था पर आग्रह को टाल भी नहीं सका इसलिए एक संस्मरण लिखने को जी चाहा।

बात उन दिनों की है जब अध्यात्म जगत में मैं धीरे-धीरे कदम रखने की कोशिश कर रहा था। तब एक विद्वान व्यक्ति ने मुझसे कहा कि जीवन में एक समय ऐसा आता है जब हमें गुरू की आवश्यकता महसूस होती है। लगता है कोई गुरु अवश्य होता जो हमें पथ देता, दिशा देता या फिर हमारे जीवन को थोड़ा संवार देता। उनकी बात सुनकर मेरा मन भी लालायित हो उठा। उस गुरुवर को पाने के लिए उसकी छवि को अपने अन्तस में बिठाने के लिए। मन में कई बार प्रश्न उठते थे। कब होंगे गुरु के दर्शन? कैसी छवि होगी उस गुरुवर की? आखिर भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली। वह समय भी आ गया, जब तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद मैं उस गुरुवर की तलाश में निकल पड़ा और पहुँच गया वहाँ पूज्य क्षमासागर जी विराजमान थे।

यह बात सन १९९४ की है। जब गुना नगरी 'महाराजश्री' के चरणों से पावन हो रही थी। पूरा गुना जैन और जैनेतर समाज उनकी अमृत वाणी से अध्यात्म रस में डूबा था।

पावन पर्युषण के दिन थे वह। मैं रात्रि ८.३० पर मंदिर पहुँचा और फिर धीरे-धीरे उत्साह और जिज्ञासा लिए महाराजश्री के कमरे तक। करीब ९ बजे महाराजश्री ने अपने कमरे का दरवाजा खोला पर उन क्षणों मुझे ऐसा लगा जैसे महाराज ने मेरे अन्तस के पट भी खोल दिए हों।

जैसे ही नमोस्तु किया। मेरा हृदय भर उठा। वैयावृत्ति के लिए लोगों का आना शुरु हो गया था। लोग आगे बढ़े। मैंने भी धीरे से साहस किया पर जैसे ही उन चरणों पर हाथ रखा तो बहुत देर से रुके ये आँसू माने ही नहीं छलक ही आए। मन कर रहा था जोर-जोर से रो लूँ पर इस भय से रुका रहा कि लोग उपहास करेंगे कि ४९ वर्ष का व्यक्ति बचपना कर रहा है। पर सच पूछिए उन क्षणों में स्थिति बचपना करने की हो रही थी। धीरे-धीरे अपने को नियंत्रित किया। सोचने लगा कि ये आँसू भी वहीं निकलने का साहस करते हैं जहाँ इनकी कीमत होती है।

लौटकर पूरी रात सो नहीं सका। अगले दिन पुनः साक्षात्कार हुआ। कुछ प्रश्नों के समाधान के बाद मैंने पूछा कि कल चौदस वाले पवित्र दिन भी शाम को मंदिर में मन नहीं लगा। पानी न पीने से गले में खुश्की थी। महाराजश्री ने उत्तर दिया कि तुमने गलती की। तुम्हें नियम तोड़ लेना था। सामर्थ्य से बाहर नियम लेने से फायदा कम नुकसान अधिक होता है। नियम तो आनन्द पाने के लिए है। आकुलता बढ़ाने के लिए नहीं।

लगा जैसे मुझे गुरुमंत्र मिल गया हो। भले ही जीवन के ४९ वर्ष व्यतीत होने पर। उन क्षणों में बार-बार भगवान के प्रति कृतज्ञ होने को जी चाह रहा था कि हे परमात्मा जिस गुरुवर की मुझे चाह थी तूने उस राह तक, उन चरणों तक मुझे पहुँचा दिया है। यह चरण मेरे पथ बनेंगे।

इन चरणों को छोड़कर गुना नगरी से इस महानगरी मुम्बई में आने का मन ही नहीं हो रहा था। फिर भी आत्मतोष को अपने भीतर समेटे हुए, पुलकित मन से वापिस चला आया। लग रहा था जैसे अमूल्य निधि को मैंने पा लिया हो और सचमुच पा ही तो लिया था। भीतर ही भीतर कहीं मन बार-बार कबीर की इन पंक्तियों को गुन-गुना रहा था कि-

'नहीं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहीं शीतल होय।
कबीरा शीतल संतजन, नाम सनेही होय।।'

- ए-१३, रेल्वे ऑफिसर्स क्वार्टर्स, चर्चगेट २०, मुम्बई (महाराष्ट्र)

मेरे गुरुवर मुनिश्री क्षमासागरजी

- श्रीमती सुधा नरेन्द्रकुमार जैन

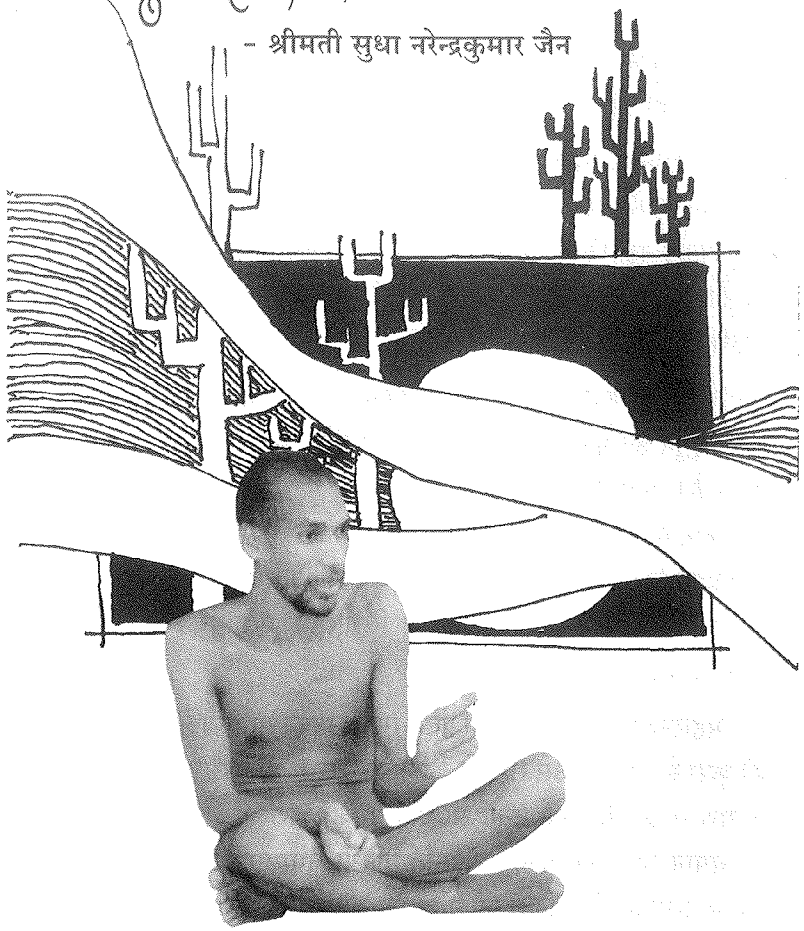

मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज अपने संघ सहित झांसी आ रहे हैं। मन में जिज्ञासा हुई कि चलकर मैं भी दर्शन करूँ। जैसे ही मन और आँखों ने मिलकर मुनिश्री को निहारा, रोम-रोम पुलकित हो उठा। उस वक्त सूर्य देवता भी विदाई लेने के लिए पीछे जा रहे थे ऐसा प्रतीत हुआ कि सूर्य की वे किरणें भी मुनिश्री के चरणों में नमन कर लुप्त होने का प्रयास कर रहीं हैं। न जाने मुनिश्री में कौन-सा अदृश्य जादू

था कि उन्हें टका-सी देखती ही रह गई। भीड़-भाड़ होने के बावजूद उनके चरणों की रज मस्तक पर धारण करने का अवसर मिला। यही पहला पावन क्षण, सुअवसर और अत्यन्त शुभ नक्षत्र था, जबकि उनकी पवित्र दृष्टि मुझ तुच्छ शरीर पर पड़ी। मुझे ऐसी अनुभूति हुई जैसे कि स्वाति नक्षत्र की बूंद सीप में गिरने पर मोती बनती है, वैसे ही उनकी करुणाभरी आँखों से निकल रही पावन दृष्टि मेरे अन्तर्मन में प्रवेश कर गई। मैं धन्य-धन्य हो गई।

सार्वभौमिक चिन्तन के इस महामानव ने जहाँ एक ओर आत्म साधना की ऊँचाईयों के स्वर्ण शिखरों को छुआ है तो वहीं सारस्वत साहित्य के महासागर में भी कम अवगाहन नहीं किया। निरीह, निर्भीक और निष्पक्ष आपका जीवन ध्रुवतारे की तरह प्रकाशमान है। आपकी वाणी में ओज है, माधुर्य है, प्रवाह है और है चुम्बकीय आकर्षण।

बिखरी हुई शक्तियों को एक सूत्र में पिरोकर कुछ रचनात्मक करने की आपकी क्षमता अद्‌भुत है। मुनिश्री में करुणा तो असीम है। उनकी मुस्कान में एक अद्‌भुत सम्मोहन है। आपकी दया से अभिभूत फटकार में भी आनन्द भरा है। सत्य को उजागर करने में अदम्य साहस है। खरी-खरी सुनाने में बेखौफ होकर बेबाक तरीके से जो कड़े प्रहार किए, निश्चय ही अविस्मरणीय रहेंगे। आत्म विजेता की खुले आकाश में अनन्त ऊँचाईयों पर उड़ान हर व्यक्ति के विचारों का ऐसा मंथन करती है कि श्रद्धा से स्वतः ही शीश झुक जाता है।

महाराज श्री के विषय में जो पढ़ा-सुना, उनका सामीप्य पाकर जो देखा और उनकी कृपा से जो पाया उसे सभी से कहने का सुख मैं भी पाऊँ। सभी के साथ मैं भी उनके गुण गाऊँ और एक नन्हा सा दीप उनके चरणों में चढ़ाऊँ। चारित्र और जाज्वल्यमान नक्षत्र की साक्षात प्रतिमूर्ति मुनिश्री क्षमासागर जी अपनी कर्तव्य और साधना में अप्रतिम हैं। मुनिश्री जी ने अपनी जीवनचर्या से न केवल श्रमण संस्कृति जैन समाज को उपकृत किया है बल्कि समूची मानव जाति को सन्मार्ग दिखाकर नव-निर्माण की नई दिशा दी है।

परम पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज एवं संघ के चरणारविंदो में हृदय की अनन्त-अनन्त असीम आस्थाओं के साथ कोटि-कोटि नमन है।

- नया बाजार, ग्वालियर

गुरुवर के आशीष

जीवन की अमूल्य निधि है
गुरुवर तेरा शुभ आशीष
शुभाशीषों की लिए डोर मैं
भावों के मोती पिरो रही।
भाव भरी सी भाव भरी मैं
भाव भरी ही जिया करूँ
प्रभु का चिन्तन तेरा सुमरन
भाव भरी मैं किया करूँ॥
कैसे पाऊँ भेद ज्ञान को?
कैसे आत्म-दीप जलाऊँ मैं
कैसे मेटूँ अज्ञान तिमिर को
कैसे निज को पाऊँ मैं॥

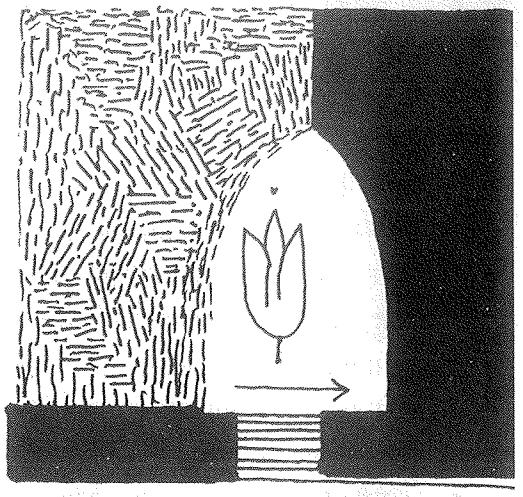

- श्रीमती मालती जायसवाल
एफ-३, गवर्मेंट्स क्वार्टर्स, कम्पू, ग्वालियर-४७४ ००१ (म.प्र.)

भावार्पण

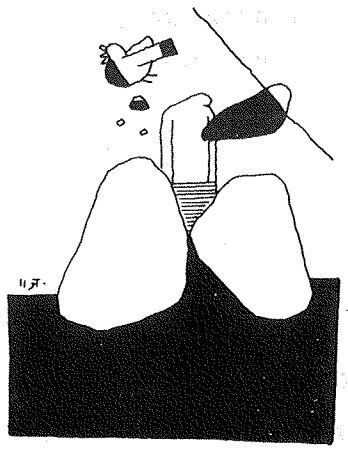

हे गुरुवर, तुम्हें देखकर
उजाला, अंजुश्री भर
छा गया,
भीतर भी, बाहर भी
आ गया हो
पर्व जैसे
हो उठा प्रदीप्त
तन भी, मन भी।
मुनिवर श्री क्षमासागर जी को समर्पित

- अर्चना मलैया,
चंद्रिका टावर्स, शास्त्री ब्रिज, जबलपुर (म.प्र.)

बचपन की यादें, सहज, भोली, निश्छल जब भी मानस पटल पर तैर आती हैं आंखों में एक चमक-सी कौंध उठती है और आज के कठोर यथार्थ से बचपन का नाजुक कच्चा मन आंखों में आंसू बन तैर आता है।

छुटपन की पप्पी अपनी स्नेहिल ननिहाल की दुलारी, लाड़ली, अनगढ़, अल्हड़ कभी इधर पल में उधर।

किसने यह नाम दिया सीमा इस अल्हड़ नदी को जो अपनी गति से अपने चहुं ओर उर्वर प्रदेश रचती घूमती थी। जैसे नदी को बांध दिया किसी ने शायद जैसे सहस्रबाहु ने बांधना चाहा था नर्मदा को पर क्या हुआ?

नाना सिंघई जीवेन्द्रकुमार जी, नानी कुसुम रानी ननिहाल स्वयं सागर और मुझे गढ़ने वाले मृदुल मामा कल के सिंघई वीरेन्द्र कुमार 'बूंद' और आज के '१०८ श्री क्षमासागर जी महाराज'।

मेरी प्रतिमाओं को प्रोत्साहित किया, प्रदर्शित किया, प्रशंसित किया, पुरस्कृत किया आपकी छैनी हथोड़ी ने आज भी जेहन में बचपन का सिखाया वह गीत गूंजता है-

''गर भला किसी का कर न सको
तो बुरा किसी का मत करना।''

माता-पिता व मामा की सुन्दर गायकी ने दिए थे मुझे ये सुन्दर शब्द व स्वर जो मेरी जीवन धारा बन गए और शायद आप भी यहीं चाहते थे न मामा...

संघर्षों का नाम ही नदी है। संघर्षों का नाम ही नारी है। जिसे आदर्शों, निषेधों के बन्धन में आज भी आपके आशीष सम्बल देते हैं, शान्ति देते हैं, शक्ति देते हैं।

पिता श्री गिरीश कुमार जी जैन, माता श्रीमती शीला जैन के प्यार, दुलार, जीवन साथी श्री राकेश जी का सहयोग, मार्गदर्शन और महाराज श्री क्षमासागर जी का अशेष, असीम आशीष ही मुझे सीमा से असीमा बनाता है।

क्षमा सहित अर्पित हैं भावांजलि...

''गर क्षमा किसी को कर न सको।
तो दण्ड किसी को मत देना।''

- श्रीमती सीमा जैन 'पप्पी', कटनी

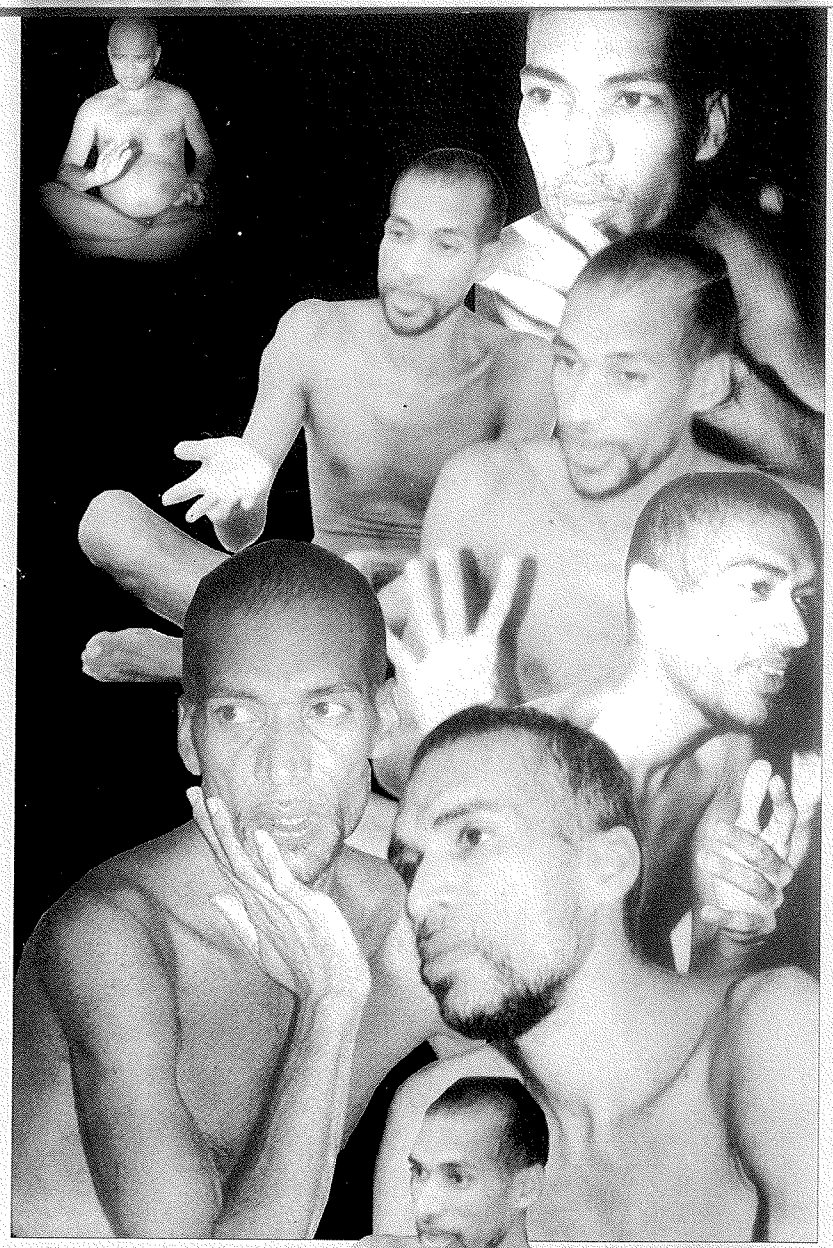

हिमालय को छूने की कोशिश